RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

वर्ष : 11	अंक : 8	मुम्बई, नवम्बर 2021	पृष्ठ : 36	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 11	ISSUE : 8	MUMBAI, NOVEMBER 2021	PAGES : 36	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2548

मूलनायक श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, कचनेर, महाराष्ट्र

परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज की समाज को अद्भुत भेंट

दिगम्बर जैन मन्दिरजी का प्रारुप

बिहार सरकार के भूतपूर्व महामहिम राज्यपाल **रामनाथ कोविंद जी** एवं भूतपूर्व महामहिम **सत्यपाल मलिक जी** भगवान महावीर जन्मभूमि पर दर्शनार्थ पधारे और उन्होंने घोषणा की निश्चित रूप से वैशाली (बिहार) भगवान महावीर की जन्मभूमि है। इसी शुभ अवसर पर उन्होंने अनुदान में 2 एकड़ भूमि वाहनों की पार्किंग हेतु संस्थान को प्रदान करी।

वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, युगप्रणेता, सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य **श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज** द्वारा अपने कार्यकाल में किये गए महत्त्वपूर्ण कार्य एवं उपलब्धियों के स्मरण हेतु जैन समाज द्वारा **कीर्तिस्तम्भ** का निर्माण भगवान महावीर जन्मभूमि, वैशाली (बिहार) में किया जा रहा है।आप सभी धर्मानुरागी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कम से कम 1,11,000/- रूपयों की सहयोग राशि इस पुण्य कार्य के लिए प्रदान कर संस्थान की **संरक्षक सदस्यता** प्राप्त करें। (उन सभी महानुभावों का नाम क्रमानुसार शिलापट्ट पर उचित स्थान पर टंकोत्कीर्ण किया जाएगा) ताकि आप भी वह स्तर पा सकें जो कि ऐसा लगे मानों आप भी वहाँ की प्रजातंत्र प्रणाली के एक ऐसे सांसद सदस्य हैं जो अपने को 'अहं राजा' मानते हुए वहाँ के विकास के कार्यों में समर्पित भाव से जुड़े हैं।

मंगल आशीर्वाद

प.पू. आचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज

इस ऐतिहासिक मंगल कार्य के लिए आप संस्थान के क्षेत्रिय अध्यक्ष/मन्त्री से सम्पर्क कर शक्तिनुसार उनके माध्यम से भी राशि उपलब्ध करा सकते हैं।

1. मानस्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ का मिला-जुला रूप बनेगा। 2. मानस्तम्भ की ऊँचाई 71 फुट होगी। 3. इसमें ऊपर जाने के लिए अन्दर से सीढ़ियाँ बनेंगी। 4. इसमें सहस्रकूट जिनालय बनाया जायेगा, जिसमें 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान होंगी।

कीर्तिस्तम्भ एवं मानस्तम्भ का प्रारुप

भावी योजनाएँ— 1. ध्यान केन्द्र 2. साधु-साध्वी निवास 3. सभागार 4. संगहालय 5. पुस्तकालय 6. स्कूल 7. अस्पताल 8. नन्द्यावर्त महल 9. कीर्तिस्तम्भ 10. वैशाली जनपद का सौन्दर्यीकरण करना।

हमारी भावी योजनाओं में अपना बहुमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें एवं किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क करें-

साहू अखिलेश जैन	राजकुमार जैन	सतीश चन्द जैन SCJ	नरेश जैन (कामधेनु), दिल्ली	अनिल जैन	मुकेश जैन	राकेश जैन	राजेन्द्र जैन
मुख्य संरक्षक	अध्यक्ष	अध्यक्ष-अर्थव्यवस्था	अध्यक्ष—अकाऊंट उपसमिति	कार्याध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	निर्माण समिति	मन्दिर व्यवस्थापक

आपके द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भगवान महावीर स्मारक समिति, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC Code : SBIN 0001624 जे.एन.यू शाखा, नई दिल्ली में खाता संख्या 10596551078 एवं HDFC बैंक खाता संख्या 50100264497212 IFSC Code : HDFC 0000586 ग्रीनपार्क नई दिल्ली शाखा में जमा कराई जा सकती है।

भगवान महावीर स्मारक समिति

वैशाली कार्यालय : वासोकुण्ड (विदेह कुण्डपुर), जिला—मुजफ्फरपुर-844128 (बिहार), मोबाईल : 07544003396

दिल्ली कार्यालय : कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067

फोन : (011) 2656 4510 मोबाईल : 09871138842 ई-मेल : lordmahavirbirthplace@gmail.com

वेबसाईट : lordmahaveerbirthplace.com सम्पर्क सूत्र : 9350505050, 9871138842

नरेश जैन (चेयरमैन-आशियाना इस्पात लिमिटेड) **पुनीत जैन** (प्रबंध निदेशक-आशियाना इस्पात लिमिटेड)

ASHIANA ISPAT LIMITED

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi,
Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in
Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया TMT Grade Fe 415,500,550

अध्यक्षीय निवेदन

सधर्मी बंधुओं,

सादर जय जिनेन्द्र !

नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें ! आप सभी ने दीपावली पर्व पर भगवान महावीर के चरणों में निर्वाण लाडू चढ़ाकर दीप मालाओं की रंग - बिरंगी रोशनी का आनंद उठाया ही होगा। कितनी सुन्दर एवं मनोहारी लगती है ये रंग बिरंगी रोशनियाँ। आज से २५४८ वर्ष पूर्व जब इस धरा पर हिंसा का बोलबाला था तब २४ वें तीर्थंकर भगवान महावीर ने विश्व यात्रा कर जन-जन तक अहिंसा का प्रसार किया एवं लोगों को **'जियो और जीने दो'** का सन्देश दिया। कार्तिक अमावस्या की प्रातःकाल की शुभबेला में पावापुरी पवित्र नगरी में इस युग के शासन नायक वर्धमान ने संसार की सारी रंगीनियों से विरक्त होकर, इस संसार के सारे बन्धनों से मुक्त होकर, अष्ट कर्मों की निर्जरा करते हुए दिगम्बरत्व के सर्वोपरि वेश में मोक्ष लक्ष्मी को ग्रहण किया था। इसी दिन सायंकाल की बेला में भगवान महावीर के गणधर श्री गौतम स्वामी ने भी ज्ञान एवं प्रकाश की अलौकिक रश्मियों से प्रकाशित हो केवलज्ञान को प्राप्त किया।

भगवान महावीर ने अल्प समय में ही अपनी ज्ञान ज्योति से सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित किया एवं जैन धर्म को जन-जन तक पहुँचाया। भगवान महावीर ने वसुधैव कुटुंबकं की परिभाषा दी है अर्थात सारी वसुधा एक कुटुंब है। भगवान महावीर ने उस समय फैली अनेक मिथ्या कुरीतियों को बंद कराया एवं लोगों को सही राह दिखाई। भगवान महावीर ने अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पांच धर्मों को पालन करने की शिक्षा दी।

कितना मनोहारी दृश्य हुआ होगा जब भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण स्थल पावापुरी में देवों ने सम्पूर्ण नगरी को दीपों से सुसज्जित किया था, इसी कारण हम सब दीप प्रज्जवलित भी करते हैं। परम सौभाग्यशाली हैं वे लोग जिन्हें सिद्धक्षेत्र पावापुरी में भगवान के चरणों में पूजा प्रक्षाल का सौभाग्य मिला है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी हृदय से उनके पुण्य की सराहना एवं अनुमोदना करती है।

भगवान महावीर अहिंसा के प्रतीक हैं और हमेशा रहेगें

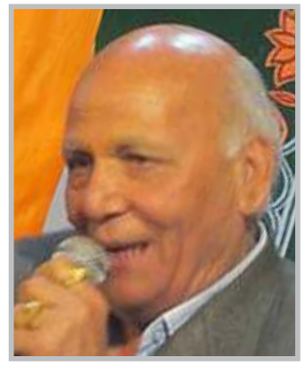

और जैनों के लिए दीपावली मुख्य रूप से भगवान महावीर का त्यौहार ही है। लेकिन हमें चिंतनीय तब हो जाता है जब इस त्यौहार पर हम जैन ही अनेक-अनेक खरतनाक आतिशबाजी पदार्थों, पटाखों आदि का उपयोग करते हैं। पाश्चात्य संस्कृति से आकर्षित हम अपनी संस्कृति को गौण कर देते हैं और अहिंसा के इतने बड़े त्यौहार के दिन हम अनके जीवों की हत्या के जिम्मेदार बन जाते हैं। हालाँकि कहीं-कहीं जैन संस्कारों का इतना प्रभाव है कि लोग पटाखे आदि का उपयोग न करते हुए अहिंसक तरीके से मंगलमय दीपावली मनाते हैं, और वो सभी धन्यवाद के पात्र हैं। अतः मैं आप सब से आग्रह करता हूँ कि आप अपने बच्चों को भगवान महावीर एवं उनकी शिक्षा के महत्त्व को समझाएं और पटाखे आदि से होने वाले हिंसा एवं दुष्परिणाम के प्रति जागृत करें।

जैसा की गत माह में मैंने बताया था कि हमारे सम्मेदशिखर जी तीर्थ का विवाद माननीय उच्च न्यायालय में चल रहा है जिसकी पैरवी इसी नवम्बर २०२१ के अंत से शुरू होने वाली है। हमें अपने तीर्थ की रक्षा के लिए कोई कमी नहीं वर्तनी है। हमारी पूर्ण कोशिश रहेगी की कोर्ट का फैसला दिगम्बर जैनों के पक्ष में आये। सम्मेदशिखरजी तीर्थ सिर्फ एक तीर्थ ही नहीं बल्कि हमारा अस्तित्व भी है। सम्मेदशिखरजी हमारी आस्था का केंद्र बिंदु है और भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने हमेशा से ही सम्मेदशिखरजी की रक्षा एवं विकास के लिए जोर दिया है और सम्पूर्ण दिगम्बर समाज का हमें हमेशा भरपूर सहयोग मिला है आशा है इस बार भी आप सबका सार्थक सहयोग प्राप्त होगा।

शिखरचन्द पहाड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष ११ अंक ८ नवम्बर २०२१

श्री शिखरचन्द पहाड़िया
अध्यक्ष

श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)
उपाध्यक्ष

श्री वसंतलाल दोशी
उपाध्यक्ष

श्री नीलम अजमेरा
उपाध्यक्ष

श्री गजराज गंगवाल
उपाध्यक्ष

श्री तरुण काला
उपाध्यक्ष

श्री संतोष जैन (पेंढारी)
महामंत्री

श्री के.सी. जैन(काला)
कोषाध्यक्ष

श्री खुशाल जैन (सी.ए.)
मंत्री

श्री विनोद कोयलावाले
मंत्री

श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)
मंत्री

प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) अनुपम जैन, इन्दौर
सम्पादक
उमानाथ दुबे
सम्पादकीय सलाहाकार
डॉ. अनेकान्त जैन, दिल्ली
श्री सुरेश जैन (IAS), भोपाल
श्री वसंतशास्त्री, चेन्नई
श्री धरमचंद शास्त्री, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर
पं. (डॉ.) महावीर शास्त्री, सोलापुर
प्रकाश पापड़ीवाल, औरंगाबाद

पर्युषण महापर्व: विकार और विकृतियों को जीतने का पर्व	7
'क्षमा वीरस्य भूषणं'	8
पर्वों का महाकुंभ :- पर्युषण महापर्व	9
प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी'	10
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी	11
जैन तीर्थों की समस्याएं	14
अनोखा अतिशय क्षेत्र – भातकुलीजी	15
मोक्षपथ के लिए सजगश्री माँ ललितपुर में समाधिस्थ हुई	17
वाराणसी की प्राचीन जैन संस्कृति एवं परम्परा	20
तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल की गतिविधियाँ	29
The correct place and date of birth aacharya vidyasagarji	31
Shreekshetra Shravanabelagola Matha	33

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।
किसी भी विवाद का निराकरण मुंबई न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में होगा

कार्यालय: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुम्बई-400004
फोन : 022-23878293 फैक्स : 022-2385 9370
website : www.tirthkshetracommittee.com, e-mail : tirthvandana4@gmail.com, Whatsapp No. : 7718859108

मूल्य
वार्षिक : 300 रुपये
त्रिवार्षिक : 800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष) : 2500 रुपये

विनम्र अनुरोध

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी स्थापना काल से ही दिगम्बरों के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध रही है और एक लम्बे समय से संघर्षरत भी है। हमारा अहिंसक संघर्ष अब निर्णायक स्थिति में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के सम्मुख पहुँच चुका है और अब लगातार केसेस चल रहे हैं। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी अपनी ओर से सुप्रीम कोर्ट के अच्छे से अच्छे अधिवक्ताओं के माध्यम से अपना पक्ष सशक्तता के साथ प्रस्तुत कर रही है इसके लिए भारतवर्ष के वरिष्ठ अधिवक्ताओं की सेवाएं ली जा रही है।

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी हम सबका है। और हमारी पहचान का एक प्रखर नक्षत्र भी है। वर्तमान में आये इस संकट का हमें मिलजुलकर सामना करना है, और विजय श्री को प्राप्त करना है। इस संवेदनशील समस्या का समाधान आपके सहयोग से ही संभव है कहीं ऐसा न हो कि हमारी तनिक सी भूल के लिए आगे आने वाली पीढ़ी हमें माफ़ न करें।

अतएव हमारा आपसे विनयपूर्वक अनुरोध है कि अपनी पहचान की रक्षा के लिए इस अत्यंत महत्वपूर्ण प्रसंग में मुक्तहस्त से दान देकर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रयत्नों को मजबूत कीजिए।

हमारा विश्वास है कि आपका वात्सल्य और विश्वास हम पर बना रहेगा एवं आपका आर्थिक सहयोग तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा चलाये जा रहे इस कार्य संघर्ष को बल प्रदान करेगा। शिखरजी के प्रकरण में आपके उदात्त सहयोग की नितांत आवश्यकता है। अत:

कृपया दान राशि **भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी** के नाम से
बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी. रोड शाखा, ब्रांच मुंबई-400004
खाता क्र. 13100100008770, **IFSC CODE:** BARB0VPROAD
में जमा कराकर उसकी मुंबई कार्यालय (टेलीफोन 022-23878293) को सूचना देने की कृपा करें।

संतोष जैन पेंढारी
महामंत्री

तीर्थ पूजा स्थल ही नहीं, संस्कृति के केन्द्र भी है

हमारे परमपावन तीर्थ निर्वाण भूमियाँ, जन्मभूमियाँ, अन्य कल्याणक क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र एवं कलाक्षेत्र हमारी पूजा, भक्ति एवं जिन आराधना के केन्द्र तो हैं ही, यह हमारी संस्कृति के भी केन्द्र हैं। प्राचीन काल में हमारे पूज्य संत इन केन्द्रों पर प्रायः रहकर आत्मसाधना करते रहते थे। इतिहास इसका साक्षी है कि हमारे पूज्य मुनिराजों ने तीर्थों पर रहकर जिनबिम्बों की स्थापना एवं शास्त्रों के सृजन के कार्य किये। तीर्थों का प्रशस्त वातावरण एवं हरीतिमा इसमें सहायक रही होगी।

वर्तमानकाल में नगरों में बढ़ती आबादी, सिकुड़ते मन्दिरों के परिसर, कोलाहलपूर्ण वातावरण एवं अन्य प्रतिकूलताओं ने अधिकांश मन्दिरों के जुड़े परिसरों में संतों के प्रवास स्थलों के रूप में उनकी गुणवत्ता घटाई है। वहाँ पर आहार, निहार की गुणवत्तापूर्ण सुविधायें घट रही हैं। श्रावकों की वैयक्तिक व्यावसायिक व्यस्तताओं ने भी स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। ऐसे में तीर्थ संतों के प्रवास विशेषतः वर्षायोगों एवं अन्य दीर्घकालीन प्रवासों, वृद्ध साधुओं के सेवासुश्रुशा वैय्यावृत्ति के केन्द्र के रूप में बहुत उपयोगी हैं।

तीर्थों पर संतों का प्रवास होने पर आने वाले यात्रियों को भी सुखानुभूति होती है उन्हें संतों के सान्निध्य में बैठकर धर्म चर्चा करने का भी अवसर मिलता है जो अनेकषः श्रावकों के जीवन में परिवर्तन का कारण बन जाता है। संतों की प्रेरणा से आगन्तुक श्रावक दान/त्याग की ओर प्रवृत्त होते हैं। दान से तीर्थों की आय बढ़ती है।

संतगण भी श्रावकों की सतत भीड़ न होने के कारण लेखन की ओर प्रवृत्त होते हैं जिससे समाज को किसी ग्रंथ की टीका/व्याख्या/प्रवचन संग्रह/कथा संग्रह आदि के रूप से स्थायी उपलब्धि होती है।

वर्तमान में कतिपय स्थानों से साधु संस्था में शिथिलाचार अथवा दुर्घटनाओं की सूचनायें मिल रही है। यह सम्पूर्ण साधु संस्था ही नहीं सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज के लिए चिन्ता का विषय है। इसका एक प्रभावी समाधान तीर्थों पर साधुओं के आवास की सुविधायें बढ़ाना हो सकता है। नगरों में किन्हीं श्रावक परिवारों के सतत सम्पर्क में रहने पर दुर्घटनाओं/शिथिलाचार की संभावना बढ़ती है। तीर्थों पर सम्पर्क के श्रावक परिवार बदलते रहेंगे, फलतः संभावना घटेगी।

हम तीर्थ प्रबन्धकों एवं तीर्थ से जुडे आर्थिक दृष्टि से सक्षम श्रावकों से अनुरोध करते हैं कि

1. तीर्थ पर उपलब्ध आवासीय सुविधाओं के एक भाग को (न्यूनतम 3-4 कक्षों को) मुनियों/आर्यिकाओं के आवास की दृष्टि से आरक्षित करें। तीर्थों पर उपलब्ध यात्री हाल या शौचालय विहीन बड़े कक्ष इस हेतु उपयुक्त रहेंगे। हाँ उनमें रोशनी, हवा, आहार बनाने की सुविधा (आहार कक्ष) भी होना जरूरी है।

2. यदि संभव हो तो क्षेत्र (विशेषतः बड़े सम्पन्न क्षेत्रों) पर संत सदन का निर्माण कराये।

3. क्षेत्र पर एक छोटा सा मूर्ति/पुरावशेष संग्रहालय भी बनावें। आपके क्षेत्र पर निर्माण के समय या चतुर्दिक मिलने वाली पुरासामग्री/पुरावशेष, सिक्के, शिला खण्ड सांगोपांग या खण्डित मूर्तियाँ वहाँ पूर्ण विवरण सहित सुरक्षित रखें। 10×12 वर्गफुट आकार का एक कक्ष से शुरूआत कर एक बड़े हाल तक का उपयोग किया जा सकता है। पं. सत्यंधर कुमार सेठी ने अपनी प्रशस्ति रूचि एवं प्रयासों से मालवा प्रांतिक सभा बड़नगर के सहयोग से उज्जैन में दुर्लभ मूतियों का एक विशाल संग्रह बना दिया जो मालवा में जैन संस्कृति का महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया है।

4. क्षेत्र पर मुख्य मन्दिर से जुड़े किसी हाल/स्वाध्याय भवन या अन्य किसी हाल में पुस्तकालय एवं वाचनालय की स्थापना करें, वहाँ पर पूर्वाचार्य प्रणीत ग्रंथों (आगमों/टीकाओं) एवं महत्त्वपूर्ण ग्रंथों को संकलित करें। इस पुस्तकालय का साधु संत एवं 2-3 दिन तीर्थ पर निवास करने वाले प्रबुद्ध श्रावक भी उपयोग कर सकेंगे। वाचनालय में आने वाली सुरुचिपूर्ण धार्मिक/सामाजिक पत्रिकाएँ श्रावकों के लिए भी यह उपयोगी रहेगी।

5. क्षेत्र के चतुर्दिक स्थित नगरों में श्रावकों के घरों के पुनर्निर्माण होने अथवा अन्यान्य कारणों से छोटे होते मकानों एवं नई पीढ़ी की व्यस्तताओं के कारण अब पाण्डुलिपियां घरों में अप्रासंगिक हो गई है। उनका रख-रखाव घर में समान्यतःअसंभव है अतः क्षेत्र पर उनके संकलन एवं संरक्षण की सम्यक् व्यवस्था की जानी चाहिए। गत 20 वर्षों में कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ ने इन्दौर एवं समीपवर्ती अंचल में ऐसी लगभग 2000 पाण्डुलिपियों का संकलन किया है। यदि ज्ञानपीठ इसका संकलन/संरक्षण न करती तो संभव है कि इनमें से लगभग 50 नष्ट हो जाती। पाण्डुलिपियाँ हमारी अमूल्य धरोहर हैं इनमें इतिहास तो छिपा है ही इनका ज्ञान मानवता के भविष्य के लिए भी उपयोगी है। अनेकान्त ज्ञान मन्दिर, बीना में भी इस क्षेत्र में श्लाघनीय योगदान दिया है।

6. कमेटियाँ इन पाण्डुलिपियों की सूची बनाकर आंचलिक समितियों एवं केन्द्रीय समिति को भी उपलब्ध करावे। इन पाण्डुलिपियों में कई बार क्षेत्रों के इतिहास के बारे में एवं अन्य सूचनायें भी प्रचुरता से मिल जाती हैं। पुराने यात्रा वृतान्त बहुत उपयोगी हैं।

7. क्षेत्र की कमेटियाँ इन सुविधाओं के विकास की योजना को अंगीकार कर क्रमशः 5-7 वर्षों में मूर्तरूप देवे तो चलेगा किन्तु सैद्धान्तिक सहमति एवं करने का निर्णय जरूरी है। वर्तमान परिस्थितियाँ जैन संस्कृति के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। हमारे नेतृत्व को प्रचार से दृष्टि हटाकर संस्कृति रक्षा पर ध्यान देना होगा वरना बहुत देर हो जायेगी।

आपके सुझावों एवं विचारों का स्वागत है।

डॉ. अनुपम जैन, ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर,
इन्दौर-452 009 (म.प्र.) मो.: 94250 53822

अहिंसा के अवतार भगवान महावीर के संदेश आज भी प्रासंगिक

- विजय कुमार जैन, राघौगढ (म.प्र.)

अहिंसा के अवतार युगदृष्टा भगवान महावीर का 2548 वाँ निर्वाणोत्सव हम कार्तिक कृष्णा 30 दिनांक 4 नवम्बर 21 दिन गुरुवार को मना रहे है। आपनेबिहार प्रदेश के नालंदा जिले स्थित पावापुरी के पद्म सरोवर के जल मंदिर के तपस्या कर मोक्ष प्राप्त किया। आपका जन्म आज से 2620 वर्ष पूर्व बिहार प्रदेश के नालंदा जिले के कुण्डलपुर में राजा सिद्धार्थ एवं माता त्रिशला के नंद्यावर्त महल में चैत्र शुक्ला 13 को हुआ था। भगवान महावीर एक युग पुरुष, युग दृष्टा, एवं महामानव थे। वे जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर थे। क्षत्रिय राजकुमार होने के बावजूद भी उन्होंने कभी विश्व विजय का सपना नहीं देखा। जिस समय भगवान महावीर का अवतरण हुआ, दुनिया में हिंसा और अत्याचार का बोल बाला था। महावीर ने विषम परिस्थिति में सच्चा मार्ग दुनिया को दिखलाया। आपने प्राणीमात्र के सुख के लिये "जिओ और जीने दो" का अमूल्य मंत्र दिया। पिछले लगभग 19 माह से सारी दुनिया कोरोना वायरस के प्रकोप से फैली जानलेवा बीमारी से पीड़ित रही है। भारत में कोरोना महामारी की दो लहर आ गई है। तीसरी लहर की चेतावनी से सभी ओर भय का वातावरण व्याप्त है। बताया गया है इस महामारी का आरंभ चीन से पिछले दिसंबर 19 से हुआ है। चीन में हिंसा और मांसाहार बढ़ने से यह महामारी आई। चीन के लोगों ने जहरीले जीव जन्तुओं को अपनी जिव्हा के लिए भोजन का प्रमुख अंग बनाया। चीन से चलकर इस महामारी ने सारे विश्व में तीव्र गति से पैर फैला दिये हैं। सभी ओर से आवाज आ रही है हिंसा और मांसाहार को त्याग कर ही कोरोना जैसी जानलेवा महामारी से बचा जा सकता हैं। इस महामारी से लड़ने भगवान महावीर का अहिंसा शाकाहार का सिद्धांत प्रासंगिक है। शाकाहारी समाज के लिये यह सुखद संदेश है कोरोना महामारी के पीड़ित दुनिया के लगभग सभी देशों में स्वस्थ्य रहने मांसाहार त्याग कर शाकाहार को स्वीकार किया जा रहा है।

विश्व प्रेम ही भगवान महावीर का दिव्य संदेश है। भगवान महावीर के इसी सिद्धांत को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने जीवन का मूलमंत्र माना था। हमारे भारत की यह नीति है किसी दूसरे देश की भूमि मत हड़पो। सन 1971 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने पाकिस्तान युद्ध में पश्चिमी पाकिस्तान जीतकर उस पर कब्जा न कर स्वतंत्र बंगलादेश बनाया।

भगवान महावीर का मंगल उपदेश था पाप से घ्रणा करो न कि पापी से। उन्होंने विरोधी को कभी विरोध से नहीं वरन सद्भावना एवं शांति से जीता। भगवान महावीर ने दुनिया को अहिंसा, सत्य, अचौर्य और ब्रह्मचर्य का पावन संदेश दिया, इस मार्ग पर चलकर उन्होंने सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त किया। उन्होंने अपना कल्याण किया एवं मोक्ष मार्ग बताया।

भगवान महावीर ने कहा-आत्मा के तीन बड़े शत्रु हैं काम, क्रोध और लोभ। इनके चक्कर में पड़ा हुआ व्यक्ति जीवन में कभी अच्छे कार्य नहीं कर पाता। स्व कल्याण के लिये इन पर विजय प्राप्त करना बहुत आवश्यक है।

विश्ववंदनीय भगवान महावीर के जीवन एवं दर्शन का गहराई से अध्ययन करते हैं तो हम पाते हैं, वे किसी एक जाति या सम्प्रदाय के न होकर सम्पूर्ण मानव समाज की अमूल्य धरोहर हैं। वह सबके थे और सब उनके थे। वह स्वयं क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए थे, उनके मुख्य गणधर इन्द्रभूति गौतम ब्राह्मण थे तथा उनकी धर्मसभा (समवशरण) में सभी धर्मों और जातियों के लोग उनकी दिव्य देशना, मंगल उपदेश सुनने के लिये आते थे। उन्हें केवल जैनों या जैन मंदिरों तक सीमित रखना उनके उदात्त एवं विराट व्यक्तित्व के प्रति अन्याय है वह जैन नहीं जिन थे। इन्द्रियजन्य वासनाओं और मनोजन्य कषायों को जीत लेते हैं,वे कहलाते हैं जिन। किसी का भी कल्याण जैन बनकर नहीं, जिन बनकर ही हो सकता है। भगवान महावीर ने कहा है त्याग व तपस्या से जीवन महान बनता है। श्रावकों को अपने आचरण में अहिंसा तथा जीवन में अपरिग्रह रखना चाहिए।

युग दृष्टा, अहिंसा, करुणा, परोपकार की पावन प्रेरणा देने वाले भगवान महावीर के 2548 वे निर्वाणोत्सव के पुनीत अवसर पर हमे चिंतन करने की आवश्यकता है। वर्तमान में विश्व में बढ़ रहे अलगाववाद, आतंकवाद, सम्प्रदायवाद, हिंसा की निरंतर बढ़ती प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने में भगवान महावीर के सिद्धांत प्रासंगिक हैं। महावीर के सिद्धांत प्राणीमात्र के लिए हितकारी हैं।आज हम त्याग, सेवा, परोपकार के मार्ग पर चलने के बजाय अपने-अपने स्वार्थों को पूरा करने में लिप्त हो गये हैं। वर्तमान में नई पीढ़ी को अच्छे संस्कार देने के स्थान पर उन्हें गुमराह किया जा रहा है, नई पीढ़ी भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों से विमुख होकर पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर रही है। समाज का नेतृत्व करने बाले ही पतन के मार्ग चलने लगे तो नई पीढ़ी को कैसा आदर्श मिलेगा।

दुनिया में सुख शांति की स्थापना करने के लिये हमें हर कीमत पर भगवान महावीर के बताये मार्ग पर चलना होगा। तभी भारत की प्राचीन संस्कृति और विरासत की रक्षा होगी। भारत ने कभी हिंसा में विश्वास नहीं किया। हमारा विश्वास भगवान महावीर के सिद्धांतों पर चलकर दूसरों की जान लेकर जीने में नहीं वरन अपनी जान की बाजी लगाकर दूसरों की रक्षा करने में है। वर्तमान में कोरोना महामारी से विश्व मुक्त हो इस हेतु भगवान महावीर द्वारा बताये मार्ग का अनुशरण करने में ही हम सबका कल्याण होगा।

भगवान महावीर के उपदेश को निम्न पंक्तियां सार्थक करती हैं:-

"मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे,"
"दीन दुखी जीवों पर मेरे उर से करुणा स्त्रोत बहे।

दीपावली के आध्यात्मिक भावों को समझें

-डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

पर्व हमारी संस्कृति के पोषक हैं, जीवन शक्ति है। दीपावली भारतीयों का एक बड़ा ही महत्वपूर्ण पर्व है। हिन्दू और जैन परंपरा में दीपावली का खासा महत्व है। दिवाली एक आदर्श पर्व है, जिसे देश के हर हिस्से में बड़े हर्ष और उत्साह के साथ मनाया जाता है।

लोग अंधेरी रात में एक दीपक जलाते हैं और इसे एक उज्ज्वल रात में बदल देते हैं। दिवाली एक ऐसा पर्व है जिसके साथ हर धर्म जुड़ा हुआ है। भारत में सभी जाति और धर्म के लोग दिवाली को बड़ी ही धूमधाम से मनाते हैं।

दीपक की भांति मनुष्य की देह भी मिट्टी ही है, किंतु उसकी आत्मा मिट्टी की नहीं है। वह तो इस मिट्टी के दीपक में जलने वाली अमृत ज्योति है। हालांकि, मनुष्य लोभ, मोह, मद, अहंकार की मोटी परतों से दबा-ढ़का अपने स्वरूप को भुला बैठा है, वह स्वयं को मात्र मिट्टी की देह समझ बैठा है और मिट्टी की इस देह का श्रृंगार करने में इतना अलमस्त हो गया है कि आत्मज्योति का चिरंतन सच अंधकार में कहीं खो गया है। दीपक की मिट्टी में ज्योति जब तक न उतरे वह अपनी सचाई से वाकिफ नहीं हो सकता। जैसे कि हम अपने वास्तविक स्वरूप से दूर-दूरतम रहने के कारण इंद्रियों से विनिर्मित देह में विचरण करने लगते हैं और इस भ्रम को सच मान लेते हैं। भ्रम का यह आवरण हमें सघन अंधकार में जीने को विवश करता है। इससे जिंदगीं की घुटन और छटपटाहट फिर से तीव्र और घनी हो जाती है।

आज चारों ओर का वातावरण भयावह है और हरेक व्यक्ति आगे बढने की होड़ में अपनों को ही पछाड़ना चाहता है। आज महाभ्रष्टाचारी, रिश्वतखोरी, आतंकवादी क्रियाशील हैं। इनकी करतूत और कारनामों से अतीत के सारे आतंक कमतर नजर आते हैं।

जीवन एवं समाज के इस अवसाद और अंधेरे को सदा-सर्वदा के लिए दूर करने के लिए दीपक के सच की अनुभूति का गहरा अनुभव आवश्यक है।

दीपावली पर दीपक जलाते समय दीपक के सच को समझना आवश्यक है। अन्यथा दीपावली की प्रकाशपूर्ण रात्रि के पश्चात् केवल बुझे हुए मिट्टी दीपक हाथों में रह जाएंगे, आकाशीय अमृत-आलोक खो जाएगा। दीपक का सच उसके स्वरूप में है। दीपक मरणशील मिट्टी का होकर भी इस ज्योति का अवतरण कर धारण करने का सबल माध्यम है। दीपक जलता है, आलोक बिखेरता है और तत्पश्चात अपनी मरणशील मिट्टी में समा जाता है। मोल है जलते हुए प्रदीप्त दीपक का, मोल बुझे दीपकों का नहीं होता। दीपक का तात्पर्य है- अपनी वर्तिका में अग्नि को धारण कर प्रकाश बिखेरना। यह

घटना असाधारण है और असाधारण है तिल-तिल जलने-गलने का वह संकल्प, जो उसकी मरणशीलता में अमृत घोलता है। इस मिट्टी की ज्योति तो अमृतमय आकाश की है। जो धरती का है, वह धरती पर ठहरा है, लेकिन ऊर्ध्वगामी ज्योति तो निरंतर आकाश की ओर भागी जा रही है।

जब तक अंतर गगन में दीपक का प्रेम, करुणा, दया, सेवा, सहयोग एवं परोपकारिता वाला प्रकाश जगमगाएगा नहीं, मानवता के इस अंध एवं काले तमस् को दूर नहीं किया जा सकता है। जब तक मन रूपी गगन में स्वच्छ विचारों की रोशनी नहीं उठेगी, हृदय के धवल आकाश में भावनाओं का निर्मल प्रकाश नहीं फूटेगा, वैमनस्यता, अमानवीयता जैसी अहंकारी प्रक्रिया थमेगी नहीं।

है घोर अंधेरा पर दीपक जलाना कब मना है।
घनघोर अंधेरे में दीपक सा जलना होगा।।

जिस दिन मानव के अंतर को दीपोत्सव पर्व की एक कोमल, जगमगाती रोशनी छू लेगी, उसी दिन से जीवन की कुहासा-निराशा छंटने लगेगी और जीवन आलोक का नया प्रतीक, पर्याय बन जाएगा। इस आलोक में ही जीवन का लक्ष्य दृष्टिगोचर हो सकता है और इस लक्षित लक्ष्य का सघन मर्म समझ में आ सकता है।

दीपावली पर जलने वाले दीपकों की संख्या एक-दो नहीं, हजारों होती है, परंतु इससे बाहर का अंधकार मिटता है, अंतर का अंधकार तो यथावत् बना रहता है। अच्छा हो कि इस दीपावली में दीपक के सच की इस अनुभूति के साथ हम एक दीपक जलाएं, ताकि इस मरणशील मिट्टी की देह में आत्मा की ज्योति मुस्करा सके।

मिट्टी के दीपक में मनुष्य की जिंदगी का बुनियादी सच समाया है। ऐसा सच जो हमारा अपना है। ऐसा सच जिसमें हमारा अनुभव पल-पल धड़कता है। यह सच ही हमारी धरोहर एवं थाती है, जो कहता है कि तुम स्वयं ज्योतिस्वरूप हो, आत्मस्वरूप हो। अपने अंदर की ओर झांको! अंतर्यात्रा करो!! अंदर में ही सब कुछ समाया हुआ है।

दीपावली की अनेक पौराणिक कथाएं हैं। इस दिन भगवान राम आतंक के महापर्याय रावण का वध करके जब अयोध्या नगरी लौटे तो उनका स्वागत प्रकाश महोत्सव के रूप में हुआ। उस दिन हर आंगन में दीपों की कतार लगाई गई। जैनधर्म के अनुसार इस दिन तीर्थंकर महावीर स्वामी को निर्वाण की प्राप्ति हुई थी और गौतम गणधर को केवलज्ञान की उपलब्धि प्राप्त हुयी थी।

इस अवसर पर जैन समुदाय निर्वाण लाडू चढ़ाकर और दीपक प्रज्जवलित कर अपनी खुशी का इजहार करता है। हमारे देश में वीर निर्वाण संवत, विक्रम संवत, शक संवत, शालिवाहन संवत, ईस्वी संवत, गुप्त संवत, हिजरी संवत आदि प्रचलित हैं लेकिन वीर निर्वाण संवत सबसे पुराना संवत है। यह हिजरी, विक्रम ईस्वी, शक आदि से अधिक पुराना है। ईसा से 527 वर्ष पूर्व कार्तिक कृष्ण अमावस्या को दीपावली के दिन ही भगवान महावीर का निर्वाण हुआ था। उसके एक दिन बाद कार्तिक शुक्ल एकम से भारतवर्ष का सबसे प्राचीन संवत 'वीर निर्वाण संवत' प्रारंभ हुआ था। ऐसी अनेक और भी पौराणिक कथाएं हैं। इन कथाओं से हम सभी सुपरिचित हैं, परंतु परिचय की इस लंबी प्रक्रिया में हम यदि किसी चीज से अपरिचित रह जाते हैं तो इस महापर्व के गहरे मर्म से। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपावली धूमधाम से मनाई जाएगी। दीप जलाए जाएंगे। मिठाइयां बांटी जाएंगी। नए-नए अलंकार एवं परिधानों का उपयोग किया जाएगा। श्रृंगार अपनी चरम सीमा को स्पर्श करेगा। उमंग एवं प्रकाश से मिश्रित इस महोत्सव में ऐसा होना तो समृद्धि का प्रतीक है।

दीपावली का मूल मर्म है कि दीपक का प्रकाश हमारे अंदर भी प्रकाशित हो और बाहर भी आलोकित हो। यह पर्व हमें मानवता की सेवा की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करता है। आइए संकल्प करें कि जिस प्रकार एक जलता हुआ दीपक अनेक दीपकों को प्रज्ज्वलित कर सकता है, उसी प्रकार से हम समाज के निर्धन, बेसहारा और जरूरतमंद लोगों के जीवन में खुशियां बांटते हुए आशा एवं समृद्धि का दीप बनें। दीवाली स्वच्छता का भी उत्सव है इसलिए हम प्रदूषण से मुक्त, पर्यावरण के अनुकूल और स्वच्छ दीवाली मनाकर प्रकृति का भी सम्मान करें। दीपमालिकायें केवलज्ञान की प्रतीक हैं। सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो, अन्धकार का नाश हो, इस भावना से दीपमालाएं जलानी चाहिये।

कह दो अंधेरों से कहीं और घर बना लें
मेरे मुल्क में रोशनी का सैलाब आया है।

पटाखों के धमाकों में गुम न होने दें दीपावली का संदेश

माननीय सुप्रीम कोर्ट पिछले कई वर्षों से पटाखों के इस्तेमाल को लेकर कई तरह के आदेश दे चुका है , जिससे बढ़ते प्रदूषण को लेकर उसकी चिंता स्पष्ट झलकती है। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने दिये अपने फैसले में पटाखों पर पूरी तरह से रोक लगाने से तो इंकार किया है, लेकिन इनके इस्तेमाल पर अंकुश लगाया है, मैं समझता हूं इसका स्वागत किया जाना चाहिए। दीपावली के मौके पर रात्रि आठ दस बजे के बीच दो घंटे आतिशबाजी की छूट दी गयी है। कम प्रदूषण फैलाने वाले और कम आवाज करने वाले पटाखे ही इस्तेमाल किये जा सकेंगे।

सर्वोच्च न्यायालय के आदेश को व्यावहारिक रूप में स्वीकारें : सुप्रीम कोर्ट ने पटाखों के निर्माण में हानिकारक प्रतिबंधित रसायन प्रयोग होने और उससे लोगों को होने वाले नुकसान व परेशानी पर नाराजगी और चिंता जताते हुए कहा कि मौज-मस्ती के लिए दूसरों के जीवन से खेलने की इजाजत नहीं दी जा सकती। पीठ ने कहा है कि वह लोगों के उत्सव मनाने के खिलाफ नहीं हैं लेकिन मौज-मस्ती के लिए किसी के मौलिक अधिकार का हनन नहीं किया जा सकता। माननीय उच्चतम न्यायालय के इस फैसले पर सभी को अमल करना चाहिए। पर्यावरण प्रेमी बनकर पर्यावरण संरक्षण में महती भूमिका निभायें।

ऐन दीपावली से कुछ दिन पहले आए इस फैसले को व्यावहारिक रूप में भी स्वीकार करना चाहिए , प्रदूषण की स्थिति जिस तरह से खतरनाक होती जा रही है , उसमें हम सबको संजीदगी दिखाने की जरूरत है। दीवाली पर पटाखे चलाने में हमें संयम बरतने की जरूरत है . संयम केवल सुप्रीम कोर्ट के आदेश के आलोक में ही नहीं, अपनी सेहत की हिफाजत के लिए भी बरतें। इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि समय के साथ पटाखे दीपावली का हिस्सा बन चुके हैं, लेकिन जब उनका अधिक इस्तेमाल सेहत और जान-माल के लिए संकट बनता जा रहा है तो फिर पटाखे न चलाने में ही भलाई है । अब तेज आवाज, रोशनी वाले तमाम पटाखे बाजार में आ गए हैं। यह पटाखे चंद क्षण तो खुशी दे सकते हैं मगर सेहत पर दुष्प्रभाव डालते हैं। यह पर्यावरण के साथ मानव जीव - जंतुओं के अलावा पेड़ - पौधों को भी प्रभावित करते हैं।

पटाखों से प्रकृति व पर्यावरण दोनों को नुकसान :

पटाखों से प्रकृति और पर्यावरण दोनों को नुकसान होता है। 464 सिगरेट के बराबर एक पटाखा है। वायु, जल, ध्वनि और मिट्टी प्रदूषण पटाखों से होता है। अरबों रुपए की व्यर्थ में बर्बादी पटाखों के रूप में हम एक दिन में कर देते हैं। जिससे नुकसान ही नुकसान है,फायदा कुछ नहीं हैजितने रुपए के पटाखे हम एक दिन में फूंक देते हैं उतने रुपए से हजारों परिवारों का भरण-पोषण किया जा सकता हैपटाखों से हो रहे दुष्परिणामों के कारण आज हमारा जीवन व्यथित हो रहा है। हजारों मूक प्राणियों की निर्मम हिंसा हो रही है। आज हमें जागरूक होने की आवश्यकता है।

शुभ दीपावली, अशुभ पटाखा : हमें मानवीय नजरिया रखते हुए 'शुभ दीपावली, अशुभ पटाखा' की परंपरा की शुरुआत करनी चाहिए। हमारी सांस्कृतिक परंपरा में बारूद को जलाना अशुभ माना जाता है फिर दीपावली पर पटाखों में भरे बारूद जलाकर हम क्या संदेश दे रहे हैं? पटाखे अशुभ के प्रतीक हैं, मिट्टी के दिए शुभ के प्रतीक । सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो, अन्धकार का नाश हो, इस भावना से दीपमालायें जलानी चाहिये।

ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ रहा खतरा : वायु, जल, ध्वनि और मिट्टी का प्रदूषण पटाखों की तेज आवाज से ही होता है। ध्वनि प्रदूषण पटाखों की तेज आवाज एवं उनसे निकलने वाली गैसों से वायु प्रदूषण, पटाखा जलने के बाद उसकी अपशिष्ट सामग्री से जल एवं मिट्टी का प्रदूषण होता है जो कि हम सभी को जीवन के लिए प्राणघातक है। पटाखे पृथ्वी के जीवन कवच 'ओजोन परत' को भी भारी नुकसान पहुंचाते हैं। पटाखों से निकले धुएं के कारण वातावरण में दृश्यता घटती है। दृश्यता घटने से वाहन चालकों को कठिनाई होती हैं और कई बार यह दुर्घटना का कारण बनती है। इसके अलावा पटाखे बनाने वाली कंपनियों के कारखानों में होने वाली दुर्घटनाएं और मौतें कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनसे सबक लेना चाहिए। इन मुद्दों में स्वास्थ्य मानकों की अनदेखी, बाल मजदूरी नियमों की अवहेलना या असावधानी मुख्य हैं। इन सब दुष्परिणामों के बाद सवाल है कि क्या पटाखे फोड़ना हमारे लिए जरूरी हैं? क्या पटाखे फोड़ने से ही दीपावली मनाना संभव है?

पटाखे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक : किसी भी धर्म में हिंसा करने, दूसरों को पीड़ा पहुंचाने का उपदेश नहीं दिया गया है। हम पटाखे फोड़कर प्रकृति को नुकसान पहुंचा रहे हैं तथा अनेक जीव जंतुओं को जलाकर प्रकृति को नुकसान पहुंचा रहे हैं। आंखों एवं कानों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है।पटाखों की तेज रोशनी से तथा बारूद आंखों में जाने से आंखें खराब हो जाती हैं। इसकी पटाखों की तेज रोशनी से एवं आंखों में जाने से आंखें खराब हो जाती हैं। इसकी तेज आवाज से कानों के परदे भी फट जाते हैं।श्वास के रोगियों के लिए यह महापर्व आराधना का नहीं अपितु महायातना का पर्व बन जाता है। विश्व में प्रतिवर्ष पटाखों की आग से लाखों लोग अंधे,बहरे,घायल हो जाते हैं। चिकित्सकों की राय में पटाखे से क्षतिग्रस्त आंख-कान को ठीक होने में भी काफी परेशानी होती है। कम आवाज वाले पटाखे भले ही आंख-कान को नुकसान नहीं पहुंचाएं लेकिन पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते ही हैं। इसके साथ पटाखों के शोर से जानवर भी अछूता नहीं रहते। पालतू जानवर पटाखों के धमाके से डर जाते हैं।

स्वदेशी अपनाएं : दीपावली पर विदेशी सामान नहीं खरीदें। अपने देश को आगे बढ़ाने के लिए स्वदेशी ही खरीदें। पटाखों से दूरी बनाए रखें। मिट्टी से बनाए गए दीये ही खरीदें। ऐसा कर हम अपनी दिवाली को तो रोशन करेंगे ही दीये बनाने वालों के जीवन में भी रोशनी भर देंगे। हम नेत्रदान, रक्तदान के समर्थक हैं तो पटाखे न जलाएं।

पटाखों में हानिकारक तत्व : जानकार बताते हैं कि पटाखों में सल्फर का प्रयोग होता है। जब पटाखे जलते हैं तो उसमें से सल्फर डाई आक्साइड, कार्बन डाई आक्साइड, कार्बन मोनो आक्साइड गैस अत्यधिक मात्रा में उत्सर्जित होती है जो हवा में घुलने के बाद आक्सीजन की मात्रा कम कर देती है। इससे सांस संबंधी रोगों का खतरा बढ़ जाता है। इसके अलावा पटाखों की तेज आवाज व जहरीले धुएं से पर्यावरण को भारी नुकसान होता है। हर बार दीवाली पर बड़ी संख्या में लोग पटाखों से जल जाते हैं और कई अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। ऐसे में क्षणिक सुख पहुंचाने वाली विध्वंसकारी चीज से बचे। पटाखों की धुंध यानि स्मॉग से सांस फूलने, घबराहट , खांसी, हृदय और फेफड़े सम्बंधी दिक्कतें, आंखों में संक्रमण, दमा का अटैक , गले में संक्रमण आदि के खतरे होते हैं। तेज आवाज वाले पटाखों का सबसे ज्यादा असर बच्चों, गर्भवती महिलाओं दिल और सांस के मरीजों पर पड़ता है। जानकारों के अनुसार पटाखों में कम से कम 21 रसायन मिलाए जाते हैं। वहीं कई वैज्ञानिकों का कहना है कि एक लाख कारों के धुएं से जितना नुकसान पर्यावरण को होता है उतना नुकसान 20 मिनट की आतिशबाजी से हो जाता है।

कई लोगों ने इस दिवाली भी यह सवाल खड़ा किया होगा कि क्या पटाखे चलाए जाएं या पर्यावरण का खयाल करके सिर्फ दीये जलाकर दिवाली मनाई जाए। पिछले कई बरसों से यह एक आंदोलन - सा खड़ा हो गया है कि पटाखों से तौबा की जाय और हवा को प्रदूषित होने इस अभियान के असर में पटाखे चलाना कम भी कर दिया है, दूसरी ओर ऐसे लोग भी हैं, जो एक दिवाली में दस - दस हजार या इससे भी ज्यादा की एक लड़ी फूक देते हैं। यह विवाद पटाखे चलाने वालों और पटाखे विरोधी लोगों के बीच ही नहीं है, दुनिया में तमाम वैज्ञानिक और नीति निर्माता भी इस बहस में उलझे हैं कि क्या इंसान ने वातावरण को सचमुच इतना बदल डाला है। पटाखे न जलाने से पर्यावरण शुद्ध रहेगा, जीव हिंसा बचेगी धन का दुरूपयोग बचेगा, किसी अनहोनी से बचेंगे और किसी जीवन में एक नया प्रकाश देकर अनेक शुभकामनाओं की दुआयें मिलेंगी अहिंसा धर्म का पालन होगा, इससे हमारे धर्मायतनों के परिसर भी स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त होंगे। तो क्या आप तैयार हैं, इस दिवाली पटाखे न चलाने का संकल्प लेने के लिए?

दिये से मिले जीवन की सीख

- महावीर दीपचंद ठोले

भारतीय संस्कृति में दीपावली का विशेष स्थान है, जो हमें अनवरत चैतन्य ऊर्जा का निर्माण करना सिखाती है। कार्तिक आमवस्या की घनघोर अंधेरी रात, चंद्र व सूर्य का एक राशी में आ जाना एवं चंद्रमा का अपनी कलाओं को समेट लेना और दीपमालाओं के माध्यम से अमावस्या के अंधकार को प्रकाशमान करना ही दीपावली है। इस रात ऐसा प्रतीत होता है मानो आज सूर्य अस्त ही नहीं हुआ है।

यह दीपावली पर्व किसी सम्प्रदाय विशेष का पर्व नहीं है। यह तो समस्त विश्व का पर्व है। भारतीय संस्कृति में इसे मंगलमय ज्योतिपर्व के रूप में मनाने की परम्परा अति प्राचीन है । कारण भारत की पावन वसुन्धरा को अपने ज्योतिर्मय व्यक्तित्व एवं लोककल्याणकारी जीवन प्रसंगो से अप्लावित करनेवाले महापुरूषों के जीवन के ऐसे प्रसंगो से जुड़े हुए हैं, जिन्होने मनुष्यमात्र को न केवल हर्षित एवं आल्हादित किया, अपितु उन्हे शाश्वत सुख की अनुभुति करने का गौरव प्रदान किया।

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम तथा अन्य महापुरूषों के प्रेरणादायी जीवन प्रसंग दीपावली से जुड़े हुए हैं। राजाराम का चौदह वर्ष के वनवास से वापस आना, तथा पुन: राज्याभिषेक होना, कृष्ण द्वारा इसी दिन नरकासुर का वध करना, इसी दिन शंकराचार्य का शरीर त्यागना, सम्राट अशोक का दिग्विजयी होना, सिक्खों के गुरू गोविंदसिंह का स्वर्गारोहण होना, स्वामी रामतीर्थ का गंगा में जलसमाधि लेना, इसी पुनीत अवसर पर प्रात:काल में अटूट शांति को प्रदान कराने वाले भ. महावीर ने मुक्ति को प्राप्त किया और निर्वाण गये, तो सायंकाल में गौतम गणधर को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी, इसी खुशी में प्रत्येक सम्प्रदाय अपने अपने तरीके से तबसे आजतक घर-घर दीप जलाकर दीपोत्सव मनाते हैं।

यह पर्व मात्र भारत में ही बड़े पैमाने में उत्साह, उल्हास, उमंग एवं आनंद से मनाया जाता है ऐसा नहीं अपितु अन्य देशों में भी दीप पर्व अपनी-अपनी रीति-रिवाजों से मानया जाता है। नेपाल में तिहार, तिब्बत में लोसर, श्रीलंका में दीवाली, मलेशिया में ज्योतिपर्व, जापान में रोनगाजी, थाईलैंड में कायोगा, चीन में नईम हुआ स्वीडन में लुसियाडे, मुस्लिम देशो में शबएरात के नामसे दीपावली उत्सव मनाये जाते है।

ईस्वी. सन से ५२७ वर्ष पूर्व, विक्रम सवत से ४७० वर्ष पूर्व, शके संवत से ३० वर्ष पूर्व कार्तिक वदी चौदस की रात्रि में पावापुर नगरी में भ. महावीर निर्वाण को प्राप्त हुए थे उसी समय से यह दीपपर्व मनाया जा रहा है, और तब से वीर निर्वाण संवत का प्रारंभ हुआ।

वास्तविक पर्व वो है जो हमें आत्मोन्नति के शिखर पर पहुँचा दे और नर से नारायण बना दे। इसलिए इस पर्व पर हमारा कर्तव्य है कि महापरूषों के दिव्य चरित्र का पुण्य स्मरण करें तथा जिस तरह उन विश्व विभूतियों ने त्याग, सच्चे प्रेम और सेवापथ पर चलकर अपनी अडिंग कर्मठता का परिचय दिया और निज के साथ-साथ जगत के जीवन को प्रकाशित किया उसी तरह हम भी अपनी शक्तियां लगाकर निज के एवं समाज और धर्म के क्षेत्र में प्रगतिशील तथा नवीनता का संचार करें।

दीपावली हमें संकेते देती है कि, अंधेरे से उजाले की ओर जाएँ, जलते दीपक इस बात का संदेश देते हैं कि स्वयं जलकर दूसरों को प्रेम का, सद्भावना का प्रकाश दें, जैसे दीपक तेल और बाती के संयोग से अंधेरा दूर करने और प्रकाश फैलाने में अपना जीवन लगा देता है उसी प्रकार हमारे जीवन में भी तप रूपी तेल जले, दया बाती का पर्याय हो और शिक्षा क्षमा का प्रतीक बने, राग जलाकर ज्ञान का दीपक जलाएं।

वास्तव में दिया गुरूके समान है, जो हमें बहुत कुछ सिखाता है। दिया न हमें केवल प्रकाश देता है बल्कि अंधकार से लड़ने का साहस भी देता है। वह हमें परोपकार सिखलाता है। वह न केवल स्वयं जलता है, बल्कि दूसरों के घर आंगन को भी रोशन कर देता है। दिया आशा का प्रतीक है। नूतन चेतना एवं नवीन कार्य करने की प्रेरणा देता है। वह भय एवं भ्रम को दूर करता है।

दिया पात्र, बाती और तेल से मिलकर बना है, तीनों एक दूसरे से संलग्न हैं। अलग रहकर किसी की अपनी कोई पहचान नहीं है। जिस प्रकार सारे दीपक एक साथ जलते हैं कोई दीप एक दूसरे के साथ भेदभाव नही करता उसी प्रकार हमें भी किसी से भेदभाव नही करना चाहिए। दीप का कार्य जलना है उसी प्रकार मनुष्य का कार्य है सत्कर्म करना है। हम अनुभव करते हैं कि चारों ओर भय, प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत स्वार्थो की अंधेरी दीवारें हैं, भ्रष्टचार, हिंसा, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद का कोहराम मचा हुआ है। इन सभी से मुक्ति पाने के लिए हमें स्वयं को दीपक बनाकर सकारात्मक रोशनी बढ़ानी होगी। आज हमारे दीपक में ज्ञानरूपी तेल की कमी है, इसलिए आंधियां हम पर प्रभाव डाल रही है। हम विपरीत दिशा में बढ़ रहे हैं। इन आंधियों में अस्तित्व बनाए रखने के लिए ज्ञानरूपी तेल और सकारात्मक उर्जा की बड़ी आवश्यकता है, हमें अपने आत्मचिन्तन को इतना बढ़ाना है कि बाहरी वस्तुओं की आवश्यकता ही न हो। भगवान महावीर ने अपने अंतर की खोज की और उसमें से सत्य, अहिंसा, त्याग जैसे अनमोल रत्न दिये। जिओ और जीने दो....परस्परोपग्रहो जीवानाम्.....अहिंसा परमो धर्म.....मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान है....ऐसे संदेश विश्व को दिये। यही हमें सत्कार्य को कराते हुए मोक्ष के द्वार पर ले जायेंगे।

प्रत्येक समुदाय में इस पर्व को मनाने के पीछे एक पवित्र उद्देश्य छिपा हुआ है। सभी इस पर्व को आनंद का, सुखशांती का, समृद्धि का प्रतीक मानते हैं। घर शुद्धि, शरीर शुद्धि एवं मन शुद्धि जैसे पवित्र उद्देश इस पर्व के मनाने में हैं। परंतु

गंगा उल्टी बहने लगी है। दीपावली की रात मानो सूर्य अस्त ही नही हुआ हो ऐसा प्रतीत होता है। हर तरफ खुशियाँ ही खुशियाँ नजर आती हैं। सभी अपने सामर्थ्य से अधिक खर्चा करते हैं। अहिंसा को पालनेवाले करोड़ों रूपयों के फटाखे फोड़कर हजारों, लाखों जीवों की हिंसा करके प्रदूषण बढ़ाते हैं। धनाढ्य लोग जुआ खेलकर, कुरीतियों एवं कुव्यसनों से दूर रहने की बजाय उसमें लिप्त होकर मौजमस्ती से दीपावली मनाते हैं।

परंतु हमारे पड़ोस में एक वर्ग ऐसा भी है जिनको यह पता भी नही चलता कि दीपावली कब आती है और कब जाती है। उनको न दीपावली के रोशनी का अहसास होता है, न दिए की लौ का, उनकी दोपहर अंधेरे में कटती है और रात भी, न उन्हें खाने को मीठा, न त्योहार के नये कपड़े मिलते हैं। इनमे से कुछ प्रकृति की मार से तो कुछ अपनों की मार से मरे हुए हैं। अत: हमें उन भाई बहनों के पास जाकर दीपावली के दीपक का प्रकाश करना होगा, जो बेचारे आर्थिकता से ठंड में सिसक रहे हैं, भूखे-प्यासे सो रहे हैं, दुखी हैं। यदि उनकी झोपड़ी में स्नेह का, प्यार का एक छोटा सा भी दीपक हमने प्रज्ज्वलित किया तो दीपावली मनाना सार्थक होगा। इस दीपावली पर हम संकल्प लें कि हम अपनों के सहयोगी बनकर उन्हें भी अपने जीवन को एक सुखद जीने का अवसर प्रदान करें। क्योकि दीपावली का दीपक हमें अहसास दिलाता है कि स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाशमान करें। ऊपर की ओर उठती हुयी दीपक की लौ ये संदेश देती है कि सदा उच्च विचार रखो, सदा ऊपर की ओर का ही चिंतन करो। दीपक की लौ हमें समझा रही है कि हे आत्मन अपनी ज्ञान ज्योति को जागृत करो। परंतु आज इंसान से इंसान को जोड़ने वाले तत्व कम और तोड़ने वाले अधिक हैं। इसी से आदमी आदमी से दूर हटता जा रहा है। इन्हें जोड़ने के लिए भगवान महावीर की अहिंसा चाहिए, करूणा चाहिए और चाहिए एक दूसरों को समझने की वृत्ती, परंतु ये सब मानवीय गुण आज विलोपित हो गये हैं। मनुष्य की सात्विक वृत्तियां, भौतिक ऐश्वर्य की चकाचौंध में सम्यकत्व को देख नहीं पा रही है। सहस्त्र दीप जलाकर भी मानव आत्मप्रदेश में एक दीपक भी जलाना नही जानता। तप, त्याग और संयम के स्थानपर विलास, परिग्रह और स्वच्छन्दता को उसने अपना लिया है। इसलिए बाहर तो उजाला है। परंतु भीतर आत्मा में दिये तले अंधेरा है।

दीपावली संदेश देती है कि, आत्मा में दयाधर्म का दीप अलोकित करें, ज्ञान का प्रकाश करें और दानवता को समाप्त कर अहिंसा, सेवा और त्याग के विकास पथपर अग्रसर होकर करुणा दया को जलाकर मानवता का वरण कर भगवान बनने की ओर पग अग्रसर करें और अपने जीवन को धर्म से प्रकाशित कर संपूर्ण देश, राष्ट्र एवं समाज व धर्म में अहिंसा धर्म का दीप जलाने का प्रयास करकर सच्ची दीपावली मनाएं और दीपपर्व सर्वत्र आलोकमय करें।

डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर में भी सम्मानित

डॉ. अनुपम जैन अभिनन्दन ग्रंथ **'अनुपम गणितज्ञ'** के प्रकाशन एवं गणिनी ज्ञानमती माता जी ससंघ के पावन सान्निध्य में दिल्ली में सम्मान के उपरान्त वापस इन्दौर आने पर इन्दौर की विभिन्न संस्थाओं द्वारा दि. जैन महासमिति के तत्वावधान में भव्य सम्मान किया गया।

श्री अशोक बड़जात्या की अध्यक्षता में सम्पन्न सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित देवी अहिल्या वि.वि., इन्दौर की कुलपति **प्रो. रेणू जैन** ने कहा कि मैं चाहकर भी दिल्ली उनके अभिनन्दन में नहीं जा पाई थी किन्तु आज उनका सम्मान कर गौरवान्वित हूँ। मा. डॉ. अनुपम जैन जैन गणित ही नहीं सम्पूर्ण भारतीय गणित के अधिकारी विद्वान हैं। मैंने उनके व्याख्यान सुने हैं उन्हें गाथायें एवं श्लोक कंठस्थ हैं, फार्मूले उंगलियों पर याद हैं जब वे धाराप्रवाह बोलते हैं तो लोग उनके ज्ञान से अचंभित हो जाते हैं। गुरुओं के प्रति उनकी अप्रतिम भक्ति है। हमने अपने वि.वि. में उन्हें प्राचीन भारतीय गणित अध्ययन केन्द्र का निदेशक मनोनीत किया है। मुझे विश्वास है कि उनके नेतृत्व में यह केन्द्र अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित करेगा जिसमें वि.वि. एवं इन्दौर दोनों का यश बढ़ेगा। वे हमारे वि.वि. में गणित के प्राध्यापक है।

प्रमुख अतिथि पूर्व मंत्री एवं लोकप्रिय विधायक **श्री महेन्द्र हार्डिया** जी ने कहा कि मैंने स्वयं डॉ. अनुपम जैन को कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ में काम करते देखा है। पाण्डुलिपियों पर वे जो काम कर रहे है वह देश का गौरव बढ़ाने वाला है। उन्होंने म.प्र. के गाँव गाँव में जाकर लगभग 1.5 लाख

पाण्डुलिपियों का संरक्षण कर केटेलॉग बनाया है। उनका नाम ही नहीं काम भी अनुपम है।

मैं उनको अपनी ओर से एवं क्षेत्र की जनता की ओर से बधाई देता हूँ।

इस अवसर पर कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, ऋषभदेव गौरव न्यास, दि. जैन समाज, सुदामानगर, पल्लीवाल समाज, दि. जैन महिला संगठन, युवा परिषद, विद्वत् महासंघ, बड़वानी, बनेड़िया आदि क्षेत्रों तथा शासकीय महाविद्यालय, सांवेर एवं अन्य अनेक संस्थाओं, डाक्टरों एवं बुद्धिजीवियों द्वारा सम्मान किया गया।

वाराणसी की प्राचीन जैन संस्कृति एवं परम्परा

प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी, वाराणसी
(राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित)

पिछले अंक से शेष ....

आपने भी देश के कोने-कोने में विहार करके जन-जन को धर्मामृत-पान कराया और अंत में हजारीबाग (झारखंड) जिले में पारसनाथ के पास सम्मेद शिखर में चंद्रप्रभ पहाड़ी (टोंक) पर एक माह का प्रतिमायोग धारण कर फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को ज्येष्ठा नक्षत्र में सायंकाल योग-निरोध कर अवशिष्ट वेदनीय, आयु, नाम, और गोत्र -इन चारों अघातिया कर्मों को पूर्णतया नष्ट करके सर्वोत्कृष्ट मोक्ष (निर्वाण) पद प्राप्त किया। इस उपलक्ष्य में सभी ने मिलकर आपका निर्वाण (मोक्ष) कल्याणक महोत्सव मनाया।

देश के प्रायः सभी जैन मंदिरों में आपकी प्राचीनतम और नवीनतम मूर्तियां विराजमान हैं।

आपकी प्रतिमा की पहचान पादपीठ के मध्य बने अर्धाकार चंद्रमा चिह्न से युक्त होती है। आपके यक्ष का नाम विजय अथवा श्याम और यक्षिणी ज्वालामालिनी है।

वर्तमान में वाराणसी के समीपस्थ आपकी जन्मभूमि चंद्रावती गांव में सुरम्य गंगातट पर दो जैन मंदिर हैं। इनमें एक दिगम्बर एवं दूसरा श्वेताम्बर जैन परंपरा से संबंधित है। आज भी यहां प्राचीन काल के पुरावशेष मिलते हैं. आपके गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान-ये चार कल्याणक हुए। चंद्रावती के अन्य नाम चंद्रानन और चंद्रमाधव भी मिलते हैं। यहां के जैन मंदिरों के आस-पास गंगातट पर पुरातात्विक महत्व के अनेक प्राचीन अवशेष मिलते हैं। एक प्राचीन गहरा कुआं भी कुछ वर्ष पूर्व तक था। पुरातत्व विभाग की ओर से इसके संरक्षण संबंधी सूचनापट्ट भी लगा हुआ है। इन प्राचीन अवशेषों को देखने से लगता है कि यदि यहां खुदाई की जाय तो प्राचीन नगरी के साक्ष्य और जैन मंदिर एवं मूर्तियों के अवशेष प्राप्त हो सकते हैं। निरंतर गंगातट का कटाव होते रहने से अनुपम प्राचीन धरोहर रूप जैन मंदिरों को गम्भीर खतरा उत्पन्न हो गया है। सरकार द्वारा इनकी सुरक्षा के लिए समय रहते यथासंभव प्रयास करना आवश्यक है।

3 : ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ :

स्वामी समंतभद्र ने स्वयंभू स्तोत्र में भगवान् श्रेयांसनाथ की स्तुति करते हुए कहा है--

श्रेयान् जिनः श्रेयसि वर्त्मनीमाः श्रेयः प्रजा शासदजेयवाक्यः ।
भवांश्चकासे भुवनत्रयेऽस्मिन् नेको यथा वीतघनो विवस्वान् ॥ १ ॥

अर्थात् हे श्रेयांसनाथ भगवान ! कर्म शत्रुओं को जीतने वाले और अबाधित वचनों से युक्त आप इन प्रजाजनों को मोक्षमार्ग में हित का उपदेश देते हुए इन तीन लोकों में अकेले ही मेघों के आवरण से रहित सूर्य के समान प्रकाशमान हुए हैं।

ऐसे ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ का जन्म वाराणसी के समीपस्थ सिंहपुर (सारनाथ) नगर के अधिपति इक्ष्वाकुवंशी महाराजा विष्णु तथा महारानी नंदा के घर फाल्गुन कृष्ण एकादशी को विष्णुयोग में हुआ था।

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान- ये तीनों ज्ञान आपको जन्म से ही थे। शैशवावस्था पार करने पर आपने कौशल, प्रतिभा और करुणाभाव से प्रजाजनों एवं परिजनों के मन को आल्हादित करते हुए यौवनावस्था प्राप्त की और आपका विवाह हुआ। फिर आप अपने पिता के एक सुयोग्य उत्तराधिकारी महाराज बने। आपके राज्य में चारों ओर समृद्धि और सुख-शांति का वातावरण आपके एक कुशल और सहृदय अधिपति होने का सूचक था।

आचार्य गुणभद्र ने उत्तरपुराण (57.40-41) में आपके व्यक्तित्व की विशेषताओं के विषय में लिखा है --

उन श्रेयांसनाथ महाराज ने महामणि के समान अपने आपको तेजस्वी बनाया, समुद्र के समान गंभीर किया, चंद्रमा के समान शीतल बनाया और धर्म के समान चिरकाल तक कल्याणकारी श्रुत-स्वरूप (शास्त्रज्ञान-संपन्न) बनाया। पूर्व जन्म में अच्छी तरह किए हुए पुण्य कर्म से उन्हें सर्वप्रकार की संपदायें स्वयं प्राप्त हो गयी थीं। अतः इनकी बुद्धि और पौरुष की व्याप्ति सिर्फ धर्म और काम में रहती थी।

इस तरह बयालीस वर्ष तक उन्होंने राज्य शासन किया। आखिर वह निमित्त भी आ गया जिसके कारण अनेक जन्मों की साधना सार्थक हुई। बसन्त ऋतु में आनंदोत्सव के समय आपने अचानक हुए ऋतु परिवर्तन को देखा और मन में बीज रूप में पूर्व से विद्यमान वैराग्य की अभिवृद्धि हुई। वे गहन चिंतन में डूबकर सोचने लगे कि जिस काल ने इस समस्त संसार को ग्रस्त कर रखा है, काल भी जब क्षण, घड़ी, घंटा आदि के परिवर्तन से नष्ट होता जा रहा है, तब अन्य किस पदार्थ में स्थिरता रह सकती है ? अतः यथार्थतः यह समस्त संसार ही विनाशशील है। एकमात्र अनिश्वर (शाश्वत) है तो वह है मोक्षपद। जब तक इसकी प्राप्ति नहीं, तब तक यह शाश्वत सुख कैसे प्राप्त होगा, अतः इसी के लिए मुझे प्रयत्न करना चाहिए।

वह इस प्रकार चिंतन के बाद उन्होंने परिजनों से मुनि दीक्षा की सहमति प्राप्त की एवं अपने इस समृद्ध राज्य का उत्तराधिकार अपने सुयोग्य पुत्र 'श्रेयस्कर' नामक युवराज को सौंपकर फाल्गुन कृष्णा एकादशी के दिन प्रातःकाल के श्रवण नक्षत्र में मनोहर उद्यान में जाकर समस्त परिग्रह त्यागकर पंचमुष्टि केशलुंचन किया और मुनि दीक्षा लेकर संयम धारण किया।

संयम ग्रहण करते ही उन्हें मनःपर्यय नामक चतुर्थ ज्ञान की प्राप्ति हो गई। दूसरे दिन सिद्धार्थ नगर में नंद राजा के घर मुनि रूप में आपका प्रथम आहार हुआ। इसी मनोहर उद्यान में दो वर्ष तक वहीं तपश्चरण के बाद, जबकि दो दिनों का उपवास चल रहा था, तुम्बूर वृक्ष के नीचे वे बैठे हुए थे कि माघ कृष्ण

अमावस्या के श्रवण नक्षत्र में सायंकाल उनमें केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ। सभी देवों और मनुष्यों ने मिलकर ज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाया। इसके साथ ही दिव्य धर्म सभा (समवशरण) में आपकी प्रथम दिव्यध्वनि बिखरी, जिसका लाभ सभी प्रकार के जीवों ने लिया। इस तरह आपका धर्मप्रवर्तन आरंभ हुआ।

आपका विशाल श्रमणसंघ था जिसमें कुन्थु गणधर, चतुर्विध श्रमणसंघ के रूप में अनेक ज्ञानी मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविका थे। आप ससंघ अनेक देशों और प्रदेशों में विहार करके अपनी दिव्यध्वनि के माध्यम से जीवों का उद्धार करते हुए अन्त में सम्मेद शिखर पहुंचे जहां एक माह तक योग निरोध कर प्रतिमायोग धारण किया तथा श्रावण शुक्लपूर्णिमा के सायंकाल घनिष्ठा नक्षत्र में अवशिष्ट कर्मों की असंख्यात गुणश्रेणी निर्जरा को और अ, इ, उ, ऋ, ऌ- इन पांच लघु अक्षरों के उच्चारण में जितना समय लगता है, उतने समय में अंतिम दो शुक्ल ध्यानों से समस्त कर्मों को नष्ट कर निर्वाण प्राप्त कर सिद्धगति में स्थित हो गए। मोक्ष प्राप्ति के उपलक्ष्य में सभी ने मिलकर हर्षोल्लास के साथ उनका मोक्ष-कल्याणक महोत्सव मनाया।

आपकी प्रतिमा (मूर्ति) की पहचान हेतु चिह्न गैंडा है। साथ ही परिकर सहित मूर्तियों में ईश्वर नामक यक्ष और गौरी नामक यक्षिणी का अंकन भी बाद में प्रचलित हुआ। आपके जन्म स्थान सारनाथ में धमेक स्तूप के पास विशाल परिसर में एक दिगम्बर जैन मंदिर बना हुआ है। जिसमें अनेक प्राचीन मूर्तियां भी स्थापित हैं। यहां आपके गर्भ, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान-ये चार कल्याणक संपन्न हुए थे। यहीं सारनाथ स्टेशन के पास हीरापट्टापुर पांडव (सिंहपुर) में एक प्राचीन श्वेताम्बर जैन मंदिर भी है जिसकी प्रतिष्ठा वि.सं. 1657 में जिनकुशलचंद्रसूरी द्वारा हुई थी।

4. तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ :

चौबीस तीर्थंकरों की गौरवशाली परंपरा में बनारस नगरी में जन्मे तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का व्यक्तित्व संपूर्ण देश में अत्यंत लोकप्रिय जननायक, कष्ट एवं विघ्न विनाशक आदि रूपों में पूजित और प्रभावक रहा है। वर्तमान में जैन परंपरा का जो प्राचीन साहित्य उपलब्ध है, उसका सीधा संबंध चौबीसवें तीर्थंकर वर्धमान महावीर से है, किंतु इनसे पूर्व नौवीं शती ईसा पूर्व काशी नरेश महाराजा अश्वसेन और महारानी वामादेवी के घर जन्मे तीर्थंकर पार्श्वनाथ, जो कि इस श्रमण परंपरा के एक महान पुरस्कर्ता थे, उस विषयक कोई व्यवस्थित रूप में साहित्य वर्तमान में उपलब्ध नहीं है, किंतु अनेक प्राचीन ऐतिहासिक प्रामाणिक स्रोतों से वे एक ऐतिहासिक महापुरुष के रूप में मान्य हैं।

पार्श्वनाथ का जन्म उग्रवंश में हुआ था। वाराणसी के महाराजा ब्रह्मदत्त के पूर्वज उग्गसेन, धनंजय, महासोलव, संयम, विस्तसेन और उदयभट्ट के नाम बौद्ध जातकों में मिलते हैं। संभवतः इनमें उग्गसेन से उग्रवंश प्रचलित हुआ होगा। बृहदारण्यक में भी गार्गी और याज्ञवल्क्य में सम्वाद के समय गार्गी ने 'काश्यो वा वैदेहो वा उग्रपुत्रः' कहकर काशी और विदेह जनों को उग्रपुत्र कहा है। बौद्ध जातक में पूर्व में उल्लिखित नामों में 'विस्ससेन' का उल्लेख महत्त्वपूर्ण है क्योंकि पार्श्वनाथ के पिता का नाम अश्वसेन का दूसरा नाम प्राकृत साहित्य में 'विस्ससेन' (विश्वसेन) ही विशेष मिलता है। उग्रवंश आदि इक्ष्वाकुवंशी ही थे।

पौराणिक कथानक के अनुसार पार्श्वनाथ के जन्म के पूर्व उनकी माता वामादेवी ने रात्रि के अंतिम प्रहर में सोलह मांगलिक स्वप्न देखे, जिनका फल था-पार्श्वनाथ अपनी मां के गर्भ में आए। अतः वैशाख कृष्ण द्वितीया को विशाखा नक्षत्र में आनत स्वर्ग से समागत पार्श्वनाथ के पूर्व भव के जीव आनतेंद्र को जैसे ही माता ने अपनी पवित्र कोख में धारण किया कि माता प्राची दिशा की भांति कांतियुक्त हो गई। नौ माह पूर्ण होते ही पौष कृष्णा एकादशी को अनिल योग, विशाखा नक्षत्र में जिस पुत्र का जन्म हुआ वही आगे चलकर तीर्थंकर पार्श्वनाथ बने। वे तीस वर्ष तक कुमारावस्था में रहे। फिर उन्होंने पौष कृष्ण एकादशी के प्रातः तीन सौ राजाओं के साथ मुनि दीक्षा ग्रहण की। संयम और ध्यान साधना में आपको अनेकानेक भयंकर कष्टों का सामना करना पड़ा, किंतु आप उनसे किंचित विचलित हुए बिना तपश्चरण में लीन रहे और लंबी साधना के बाद उन्हें चैत्र कृष्ण चतुर्थी को सर्वोच्च केवलज्ञान की प्राप्ति हो गयी। इसकी प्राप्ति के साथ ही अर्हन्त पद प्राप्त करके वे सर्वज्ञ-सर्वदर्शी बन गए।

आत्म-कल्याण के बाद, अर्थात् जन-जन के कल्याण हेतु काशी, कोशल, पांचाल, मरहटा, मारु, मगध, अवंती, अंग-बंग-कलिंग आदि सभी क्षेत्रों में भ्रमण करते हुए धर्मोपदेश के द्वारा अहिंसा, सत्य, आदि सिद्धांतों का प्रचार एवं धर्मान्धता, पाखंड, ऊंच-नीच की भावना-आदि दोषों को दूर करने का उपदेश देते और विहार करते हुए हजारीबाग के निकट सम्मेद शिखर पहुंचे जहां प्रतिमायोग धारण करते ही श्रावणशुक्ला सप्तमी की प्रातः अवशिष्ट अघातियों के कर्मों का क्षय करके उन्होंने मोक्ष (निर्वाण) प्राप्त किया। उनके आदर्शपूर्ण जीवन और धर्म-दर्शन की लोकव्यापी छवि आज भी संपूर्ण भारत तथा इसके सीमावर्ती क्षेत्रों और देशों में विविध रूपों में दिखलाई देती है। इनकी मूर्ति की पहचान मुख्यतः सप्त फणावली और पादपीठ के मध्य सर्प चिह्न से होती है। यक्ष धरणेन्द्र और यक्षिणी पद्मावती का मूर्तांकन भी इनकी मूर्ति की पहचान में सहयोगी बनते हैं।

लोकव्यापी प्रभाव -

अर्धमागधी प्राकृत साहित्य में 'पुरुसादाणीय' अर्थात् लोकनायक श्रेष्ठपुरुष जैसे अति लोकप्रिय व्यक्तित्व के रूप में प्रयुक्त इनके सम्मानपूर्ण विशेषणों का उल्लेख मिलता है। वैदिक और बौद्ध आदि अनेक धर्मों तथा अहिंसा एवं आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत संपूर्ण भारतीय संस्कृति पर इनके चिंतन और प्रभाव की अमिट गहरी छाप आज भी विद्यमान है। वैदिक, जैन और बौद्ध साहित्य में इनका उल्लेख मिलता है तथा व्रात्य, पणि और नाग आदि जातियां स्पष्टतः पार्श्वनाथ की अनुयायी थीं। वर्तमान में भारत में प्रचलित नाग-पूजा भी निश्चियतः इन्हीं से संबंद्ध प्रतीत होती है।

जैनधर्म का प्राचीन इतिहास (भाग 1, पृ. 359) के अनुसार नाग तथा द्रविड़ जातियों में तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मान्यता असंदिग्ध है। श्रमण संस्कृति के अनुयायी व्रात्यों में नागजाति सर्वाधिक शक्तिशाली थी। तक्षशिला, उद्यानपुरी, अहिच्छत्र, मथुरा, पद्मावती, कांतिपुरी, नागपुर आदि इस जाति के प्रसिद्ध केंद्र थे। तीर्थंकर पार्श्वनाथ नाग जाति के इन केंद्रों में कई बार पधारे और यहां इनके चिंतन से प्रभावित हो सभी इनके अनुयायी बन गए। इस दिशा में गहन अध्ययन और अनुसंधान से आश्चर्यकारी नये तथ्य सामने आ सकते हैं

जो तीर्थंकर पार्श्वनाथ के लोकव्यापी स्वरूप को और अधिक स्पष्ट रूप से उजागर कर सकते हैं।

इसी संदर्भ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. जगदीश गुप्त का यह कथन महत्त्वपूर्ण है- "तीर्थंकर पार्श्वनाथ की महत्ता नागपूजा, यक्ष पूजा और सूर्य पूजा से समर्थित है। इससे यह सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृति में उनकी कितनी लोकप्रियता रही है और कितने रूपों में उन्हें चित्रित एवं उत्कीर्ण किया गया है। भारतीय कलाकारों ने कितनी तन्मयता से उनके स्वरूप को अपनी कल्पना से समृद्ध किया है। नाग-छत्र के भी कितने रूप मिलते हैं-यह पार्श्वनाथ की असंख्य प्रतिमाओं के अनुशीलन से पहचाना जा सकता है। मेरी दृष्टि में भारतीय संस्कृति के स्वरूप को समझने के लिए तीर्थंकर महावीर और गौतम बुद्ध के बाद यदि कोई जैन तीर्थंकर कलात्मक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं, तो वे पार्श्वनाथ ही हैं। ई. पूर्व दूसरी-तीसरी सदी के जैनधर्मानुयायी सुप्रसिद्ध कलिंग नरेश महाराजा खारवेल भी इन्हीं के प्रमुख अनुयायी थे। अंग, बंग, कलिंग, कुरु, कौशल, काशी, अवंती, पुण्ड, मालव, पांचाल, मगध, विदर्भ, भद्र, दशार्ण, सौराष्ट्र, कर्नाटक, कोंकण, मेवाड़, लाट, कश्मीर, कच्छ, वत्स, पल्लव और आमीर आदि तत्कालीन अनेक क्षेत्रों, राष्ट्रों और देशों का उल्लेख आगमों में मिलता है जिनमें पार्श्वनाथ ने ससंघ विहार करके जन-जन के लिए हितकारी धर्मोपदेश देकर जागृति पैदा की।

भारत के पूर्वी क्षेत्रों, विशेषकर बंगाल, बिहार, उड़ीसा आदि अनेक प्रान्तों के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में लाखों की संख्या में बसने वाली सराक, सद्गोप, रंगिया आदि जातियों का सीधा और गहरा संबंध तीर्थंकर पार्श्वनाथ की परंपरा से है। इन लोगों के दैनिक जीवन व्यवहार की क्रियाओं और संस्कारों पर तीर्थंकर पार्श्वनाथ और उनके चिंतन की गहरी छाप है।

इस प्रकार तीर्थंकर पार्श्वनाथ तथा उनके लोकव्यापी चिंतन ने लंबे समय तक धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र को प्रभावित किया है। व्यवहार की दृष्टि से उनका धर्म सहज था। धार्मिक क्षेत्रों में उस समय पुत्तैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा आदि के लिए हिंसामूलक यज्ञ तथा अज्ञानमूलक तपों का काफी प्रचलन था किंतु उन्होंने पूर्वोक्त क्षेत्रों में विहार (भ्रमण) करके अहिंसा का जो समर्थ प्रचार किया, उसका समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा और अनेक आर्य तथा अनार्य जातियां उनके धर्म में दीक्षित हो गईं। धर्म के नाम पर हिंसा की जगह अब तक जो भी अहिंसक प्रयोग देखे जा रहे हैं, इनमें पार्श्वनाथ के उपदेशों का ही विशेष प्रभाव है ।

आचार्य समन्तभद्र ने आपकी स्तुति करते हुए कहा है --

स सत्य विद्यातपसां प्रणायकः समग्रधीरुग्रकुलाम्बरांशुमान।
मया सदा पार्श्वजिनः प्रणम्यते विलीन मिथ्यापथदृष्टि विभ्रमः ॥ 5 ॥

अर्थात् आप सत्य विद्याओं और तपस्याओं के प्रणेता हैं, पूर्णबुद्धि युक्त सर्वज्ञ हैं तथा उग्रवंश रूप आकाश में चंद्रमा के समान हैं। आपने अपने उपदेशों के द्वारा मिथ्यादर्शन आदि अनेक कुमार्ग दृष्टियों को दूर कर सम्यग्दर्शन-ज्ञान और चारित्र्य रूप रत्नत्रय का मार्ग प्रशस्त किया है। इसलिए हे पार्श्व! इन गुणों के कारण मैं सदा आपको प्रणाम करता हूं।

हमारे देश के हजारों नए और प्राचीन जैन मंदिरों में सर्वाधिक तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मूर्तियों की उपलब्धता भी उनके प्रति गहरे आकर्षण, गहन आस्था और लोकव्यापी प्रभाव का ही परिणाम है। मध्य एवं पूर्वी देशों के व्रात्य क्षत्रिय उनके अनुयायी थे। गंगा का उत्तर एवं दक्षिण भाग तथा अनेक नागवंशी राजतंत्र एवं गणतंत्र उनके अनुयायी थे । श्रावस्ती के श्रमण केशीकुमार भी पार्श्व की ही परंपरा के श्रमण थे। संपूर्ण राजगृह भी पार्श्व का उपासक था। तीर्थंकर महावीर के माता-पिता तथा अन्य संबंधी पापित्य परंपरा के श्रमणोपासक थे।

महात्मा बुद्ध के जीवन-प्रसंग से पता चलता है कि वे अपनी साधनावस्था में पार्श्व परंपरा से संबद्ध रहे थे। मज्झिमनिकाय, महासिंहनाद सुत्त (1.1.2) के उल्लेखानुसार एक बार बुद्ध अपने प्रमुख शिष्य सारिपुत्र से कहते हैं- "सारिपुत्र! बोध प्राप्ति से पूर्व मैं दाढ़ी, मूंछों का लुंचन करता था। मैं खड़ा रहकर तपस्या करता था, उकडूं बैठकर तपस्या करता था। मैं नंगा रहता था। लौकिक आचारों का पालन नहीं करता था। हथेली पर भिक्षा लेकर खाता था। .बैठे हुए स्थान पर आकर दिए हुए अन्न को, अपने लिए तैयार किए हुए अन्न को और निमंत्रण को भी स्वीकार नहीं करता था। गर्भिणी व स्तनपान कराने वाली स्त्री से भिक्षा नहीं लेता था।" बुद्ध द्वारा वर्णित यह समस्त आचार जैन साधुओं के हैं। इससे प्रतीत होता है कि गौतम पार्श्वनाथ की परंपरा के किसी श्रमण संघ में दीक्षित हुए और वहां से उन्होंने बहुत कुछ सद्ज्ञान प्राप्त किया। बाद में बुद्ध ने कारणवश अलग होकर मध्यमार्गी बन अपना स्वतंत्र मत चलाया।

कुछ इतिहासकारों का यह भी मानना है कि प्रधान वेदों के बाद उपनिषदों में आध्यात्मिक चिंतन की प्रधानता के समावेश में तीर्थंकर पार्श्वनाथ के चिंतन का काफी प्रभाव है। इस तरह वैदिक परंपरा को आध्यात्मिक रूप प्रदान करने में इनका बहुमूल्य योगदान माना जा सकता है।

इस प्रकार तीर्थंकर पार्श्वनाथ का ऐसा लोकव्यापी प्रभाव व्यक्तित्व एवं चिंतन था कि कोई भी एक बार इनके या इनकी परंपरा के परिपार्श्व में आने पर उनका प्रबल अनुयायी बन जाता था। तभी तो हिंदी जगत के शिखर पुरुष भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखाः

तुमहि तौ पार्श्वनाथ हो पियारे
तलफन लागै प्रान बगल तै छिनहु होत न न्यारै !
तुम सौ और पास नहीं कोउ मानहु करि पतियारे ।
'हरीचंद्र' खोजत तुमही को वेद-पुरान पुकारै ॥

इस प्रकार वाराणसी प्रारम्भ से ही जैन संस्कृति का समृद्ध और प्रधान केन्द्र रहा है। वर्तमान में स्याद्वाद विद्यालय, भदैनी, गणेशवर्णी शोध संस्थान नरिया, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, करौंदी, जैसी अनेक विशिष्ट संस्थाओं तथा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के जैन दर्शन एवं प्राकृत- जैनागम विभाग तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में जैन एवं बौद्ध दर्शन विभाग तथा अन्यान्य विभागों द्वारा इस क्षेत्र में अध्यापन अध्ययन और अनुसंधान के माध्यम से अनेक नये अनुसंधान सामने आ रहे हैं ,जो स्वतंत्र निबंध का विषय है।

गाँधी के गुजरात में अहिंसकों पर हिंसा क्यों ?

- कैलाश मड़बैया, भोपाल

जब यू.एन.ओ. तक में अहिंसा दिवस मनाया जा रहा हो और हम महावीर, गौतम, गांधी के देशवासी अपनी अहिंसा पर गौरवान्वित हो रहे हों उसी समय महात्मा गाँधी की १५१ वीं जन्मजयंती मना चुके भारतीय, गुजरात में हिंसा का ताण्डव ?..और वह भी अहिंसकों पर,...है न शर्मनाक ? पर यह कड़वी सच्चाई है। सम्पूर्ण श्रमण समाज आक्रोषित है, दुखी है। कोई सुनने वाला नहीं दिखाई दे रहा?...

दरअसल गुजरात स्थित गिरनार पर्वत की पांचवीं टोंक पर आदिकाल से पाषाण पर उकरे जैन तीर्थंकर नेमिनाथ के निर्वाणोपरान्त, नैसर्गिक श्री चरणों और शिला पर स्थापित नेमिनाथ की मूर्ति पर, कतिपय पण्डे/ अधोरी जबरन जमे बैठे हैं और अल्पसंख्यक/अहिंसक जैनियों को बन्दना करने आने पर मार पीट रहे हैं, उन्हे नेमि-चरणों के दर्शन नहीं करने दे रहे और कोर्ट के निर्णय तक की अवहेलना कर, वहीं अनिधकृत कब्जा कर अवैधानिक निर्माण भी अब कर लिया है। यह देख विश्वास नही होता कि हम २१वीं सदी में रह रहे हैं? ऐसे लगता है कि मुगल काल में हों और शासन की शह पर ही जैन-तीर्थ पर डाका डाला जा रहा है। जैन निरुपाय हो मूक सब सह रहे हैं। अहिंसक नहीं उन्हें नपुंसक माना जा रहा है ? आखिर क्यों? क्या जैन बर्बर काल में जीवित गुलाम हैं ?

सर्वविदित है कि जैनियों के देश भर में स्थापित अनेकानेक तीर्थों में आदि काल से, 'सम्मेदशिखरजी' और 'गिरनार जी' दो ऑखों की तरह सर्वाधिक महत्वपूर्ण कल्याणक तीर्थ हैं। कल्याणक तीर्थ वे होते हैं जहॉ भगवान के जन्म, मोक्षादि कोई घटनाक्रम हुये हों, इन्हें बदला नहीं जा सकता। उसी तरह जैसे अयोध्या में रामजन्म भूमि होने से वह अन्यत्र नहीं हो सकती।

गिरनार पर्वत की पांचवीं टोक पर जहॉ आदिकाल से नेमि-श्री चरण जी देव-निर्मित हैं वह अल्प स्थल जैन अनुयायियों के लिये नेमि निर्वाण तीर्थ है, इससे खास है। पर उस पर कुछ अधोरियों की नजर लग गई जिसकी परिणति वर्षो बाद अब उनके अनाधिकृत कब्जे से हुई है। सभी को पता है कि जैनियों के तीर्थ कठिन तपश्चरण के कारण पर्वतों पर होते हैं और जैनेतरों के तीर्थ आबादी की बसावट के कारण नदी किनारे होते हैं। और उकेरे श्री चरणों की स्थापना तो केवल जैन धर्मावलम्बियों में ही है। जैनेतरों में नहीं।

आपने सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी की कथा तो सुनी होगी ? सो लालची कतिपय पण्डों को लगा कि रोज रोज कौन मुर्गी से अण्डे ; पैसे जैन आगन्तुक भक्तों से मांगें इससे मुर्गी ही हड़प लो तो मालामाल हो जायेंगे। बस फिर क्या था चूंकि गिरनार पर्वत पर या तलहटी में जैन अब रहते नहीं या बहुत कम हैं। गिरनार तीर्थ-दर्शन करने बाहर से जैन भक्तगण सदैव आते रहते थे/ आते ही हैं, तो उनसे पैसे ऐंठे जाते रहते थे। पांचवीं टोंक पर जीर्णोद्धार का कार्य जैन ट्रस्ट ही १९५०-५१ तक कराता रहा। पांचवीं टोंक तक सीढ़ियॉ भी जैन ट्रस्ट द्वारा ही निर्मित कराई गई क्योंकि मालिकाना हक जैनों का है। गत कुछ वर्षो पहले उक्त पण्डों/ नाथ सम्प्रदाय वालों ने उक्त चरणों वाले स्थल को

दत्तात्रय का स्थल कह, कब्जा करने की कोशिश की तो जैनियों ने आपत्ति की। झगड़ा बढ़ा तो गुजरात सरकार ने उस स्थल को १९६५ में पुरातात्विक स्थल घोषित कर, किसी को भी बिना अनुमति निर्माण करने पर रोक लगा दी। १९७१ में स्थानीय स्तर पर बण्डीलाल धर्मशाला के जैन प्रतिनिधियों और उक्त हिन्दु महंतों के बीच कलेक्टर की मध्यस्थता अनुसार समझौता भी हुआ था जिसमें पण्डों ने स्वीकार किया था कि जैनियों को नेमि चरणों पर पूजा करने व दर्शन का अधिकार है व रहेगा। लेकिन कुछ समय बाद ही पण्डे बदल गये। स्थितियां फिर जस की तस।

उन पण्डों ने जबर्दस्ती कर बिना अनुमति के अवैध निर्माण किया तो फिर जैन लोग कोर्ट में चले गये। निर्णय दोनों पक्षों के प्रमाणों को सुनने के बाद जैनियों के पक्ष में गया। फिर भी उक्त पण्डे संख्या बल पर जैनियों को दर्शन करने से रोकते रहे और गेट आदि बनाने लगे। फिर प्रकरण कोर्ट में गया तो 'स्टे' लगा दिया गया। अदालत ने पुलिस बैठाने के आदेश भी दिये। उक्त पण्डों ने इसे बहुसंख्यक हिन्दुओं को भड़का कर हिन्दू विरुद्ध जैनियों की लड़ाई बनाने की कोशिश की तो गुजरात सरकार के कतिपय लोगों ने वोटों की राजनीति में अल्पसंख्यक जैनियों के विरुद्ध काम करना शुरु कर दिया। दर्शन करने गये अहिंसक जैन मुनि श्री प्रबल सागर जी तक पर आक्रमण किया गया और पुलिस ने रिपोर्ट भी नहीं लिखी। जैन बहुत दुखी हुये जब आक्रमण करने वाले व्यक्ति को राज्याश्रय दिया गया।

ज्ञातव्य है कि दत्तात्रय के खास पावन स्थल चित्रकूट, माउण्ट आबू और चिकमगलूर में हैं, गिरनार पर्वत पर कुछ भी होने के प्रमाण नहीं हैं। जब कि नेमिनाथ तीर्थंकर के पुरातात्विक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, पौराणिक सभी प्रमाण विद्यमान हैं। देखें लंदन तक के म्यूजियम के जेम्स बर्गिस की १८५७ में प्रकाशित रिपोर्ट आदि।

भारतीय अहिंसक जैन समाज को अल्पसंख्यक होने के कारण भी अपने तीर्थ पूजने और संरक्षित रखने के संवैधानिक अधिकार प्राप्त हैं। धर्मनिरपेक्ष देश में हर धर्मानुआयी को अपने भगवान को पूजने की स्वतंत्रता है। भारत सरकार के **1991- The places of worship special provisions** के अनुसार १५ अगस्त १९४७ की थिति नहीं बदली जा सकती। जैन तीर्थ गिरनार की स्थिति भी अपरिवर्तनीय है। इससे नाथ पण्डों का सभी निर्माण अवैधानिक है। पर **'जिसकी लाठी उसकी भैंस'** वाली स्थिति जारी है। कोई सुनने वाला नहीं गुजरात सरकार के कानो पर जूँ नहीं रेग रही और वर्तमान जैन नई तीर्थरक्षा कमेटी आदि निष्क्रिय सिद्ध हो रही हैं। पर भारत भर के जैन धर्मी अपने गिरनार के नेमि चरण दर्शन करने को तड़प रहे हैं। बेबस हैं। केवल पूजाओं में, पुराणों में गिरनार शेष रह गया लगता है। शायद जैनियों पर, अल्पसंख्यक व अहिंसक होने के कारण ही कतिपय अराजकों के कारण गहरा संकट आया है।

अन्त में- क्या नाथ सम्प्रदाय वाले बसुधैव कुटुम्कम का अपना हिन्दु धर्म भूल गये हैं ? गिरनार पर्वत इतना विशाल है, क्यों कथित पण्डे अपने जैन भाइयों के लिये मात्र ५ फुट की चरणचिन्ह वाली जगह छोड़ कर, शेष बड़े गिरनार पर्वत पर ही अपने दत्तात्रय आदि यदि वहाँ कुछ साक्ष्य हों तो भगवान आदि के मंदिर मूर्ति क्यों नहीं स्थापित कर लेते ? अहिंसक जैनों पर ही यह हिंसा क्यों ?...जरुरी है कि 'आ बैल हमे मार ?'। कतिपय अराजक तत्व, करोड़ों भले गुजरातियों को क्यों कलंकित करें ? पर जैन भी निराश न हों। कुछ उदाहरण सामने हैं, आखिर कितने वर्षो बाद अयोध्या में राम भक्तों को सफलता मिली ? तो ऐसे ही भारत में जब तक एक भी जैन शेष है, नेमिनाथ के भक्तों को भी उनका तीर्थ आज नहीं तो कल मिल कर ही रहेगा। बस संघर्ष जारी रखें। अराजक तत्व कोई भी अवैध निर्माण कर लें वह तो कानूनन मिटकर ही रहेगा। रहेगा तो सच ही, सच के सिवा सभी नष्ट होगा। भारत में राजनीतिज्ञ कोई भी खेल खेलते रहें, न्यायालय भारत में जन-आस्था के केन्द्र है, देर भले हो जाये पर कोर्ट दुरुस्ती ही देंगे। आशा है हम अहिंसा और न्याय का पथ नहीं छोड़ेंगें। जय जिनेन्द्र।

मध्यप्रदेश की जैन समाज ने भी गिरनार तीर्थ बचाने बावत राज्यपाल को सौंपा ज्ञापन

भारतवर्षीय जैन समाज में गिरनार तीर्थ की वर्तमान स्थिति से तीव्र आक्रोश व्याप्त है। मध्यदेशीय जैन समाज के प्रमुख प्रतिनिधि मण्डल ने महामहिम राज्यपाल म.प्र. को भोपाल स्थित राजभवन में गत दिवस राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा जिसमें मांग की गई कि अल्पसंख्यक और अहिंसक जैन समाज को उनके आदिकालीन महातीर्थ गिरनार (गुजरात) की पांचवी टोंक स्थित तीर्थंकर नेमिनाथ के निर्वाण तीर्थ श्री चरणजी के दर्शन-पूजन के मौलिक संवैधानिक अधिकारों से वंचित नहीं किया जावे एवं कतिपय अराजक तत्वों द्वारा वहाँ किये जा रहे अनाधिकृत निर्माण को रोका जावे। प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व राष्ट्रीय 'अनेकान्त' अकादमी के अध्यक्ष एवं प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री कैलाश मड़बैया ने किया एवं स्थिति ज्ञापित की। चौक जैन समाज के अध्यक्ष श्री प्रमोद हिमांशु ने ज्ञापन सौंपा, श्री प्रियंक जैन पंचायत भोपाल आदि भी शामिल रहे।

उल्लेखनीय है कि देश भर में जैन समाज द्वारा हर प्रदेश में ज्ञापन देकर भारत सरकार और गुजरात सरकार से अल्पसंख्यकों पर हो रहे निंरतर आक्रमणों से सुरक्षा की मांग की जा रही है एवं कोर्ट के निर्णय के क्रियान्वयन

कराने को गुजरात सरकार से राज - धर्म निभाने का अनुरोध किया जा रहा है। राज्यपाल महोदय ने अपने ए.डी.सी. श्री आगम जैन जी को विधिसंगत कार्यवाही कराने के निर्देश दिये और प्रतिनिधि मण्डल को आश्वस्त किया कि श्रमण समाज पर अन्याय नहीं होने दिया जायेगा।

मांगीतुंगी में भगवान ऋषभदेव के नाम से १०० बेड वाला अस्पताल बनाने का किया निवेदन

मांगीतुंगी प्रतिनिधि मण्डल मंत्री महोदया के साथ

आरोग्य एवं कुटुब कल्याण राज्यमंत्री डॉ. भारतीताई पवार भारत सरकार को भगवान ऋषभदेव 108 फीट मूर्ति निर्माण कमेटी मांगीतुंगी की ओर से मांगीतुंगी में एक 100 बेड का अस्पताल बनाने हेतु निवेदन दिया। भगवान ऋषभदेव के नाम से एक हॉस्पिटल भारत सरकार की ओर से बने एवं उसमें सभी को उपचार मिले, ऐसी भावना कमेटी ने व्यक्त की। इस समय भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष एवं मूर्ति निर्माण कमेटी के महामंत्री श्री संजय पापडीवाल, कोषाध्यक्ष श्री प्रमोद कासलीवाल, विश्वस्त श्री भूषण कासलीवाल, श्री चंद्रशेखर कासलीवाल, श्री विजय पापडीवाल, श्री प्रशांत पापडीवाल भी उपस्थित रहे। प्रतिनिधि मण्डल ने मंत्री महोदया डॉ. भारती पवाराताई के दिल्ली निवास स्थान पर जाकर उनसे चर्चा की और उनको मांगीतुंगी आने का निमंत्रण भी दिया जो उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया।

वर्णी जी पर हुआ "विशेष आवरण" जारी
मध्यप्रदेश के राज्यपाल द्वारा अनावरण किया गया

आज़ादी का 75 वां वर्ष अमृत महोत्सव समारोह पूरे देश में मनाया जा रहा है । प्रधानमंत्री कार्यालय तथा संस्कृति मंत्रालय की योजनानुसार भारतीय डाक विभाग पूरे देश में विशिष्ट विभूतियों पर जिनका आज़ादी में विशेष योगदान रहा है पर विशेष आवरण जारी कर रहा है, इस पर संस्कृति मंत्रालय ने विशेष कार्य योजना बनाई है । मध्यप्रदेश डाक परिमंडल द्वारा 06 विशेष आवरण जारी किये गए हैं जिनमें जैन समाज के उद्धारक, अनंत उपकारी, हजारों विद्वानों के जनक, संस्कृति संवर्धक, परमपूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी महाराज का भी नाम शामिल है। यह वर्णी जी के योगदान को स्मरण करने का अवसर है।

डॉ. सुनील जैन 'संचय' ललितपुर ने जानकारी देते हुए बताया कि वर्णी जी आज़ादी के प्रति अत्यधिक सजग थे । व्रती अवस्था में उन्होंने आज़ाद हिंद फौज की सहायतार्थ जबलपुर में आम सभा में अपनी 'चादर' दान दे दी थी, तात्कालिक रूप से यह चादर उस दौरान 3000 हजार रुपये में नीलाम हुई थी, इससे प्रभावित होकर अनेक लोग सहयोग को आगे आये, उनके अनेक शिष्यों ने स्वतंत्रता संग्राम में अप्रत्यक्ष रूप से भाग लिया।

13.10.21 को माननीय मंगुभाई पटेल राज्यपाल मध्यप्रदेश, श्री जितेंद्र गुप्ता मुख्यपोस्टमास्टर मध्यप्रदेश परिमंडल द्वारा इस 'विशेष आवरण' का अन्य 06 आवरणों के साथ राजभवन भोपाल में अनावरण किया गया। साथ ही सागर कैंट प्रधान डाकघर में श्री ए.के. जैन प्रवर अधीक्षक डाकघर सागर, श्री के.के. सराफ मंत्री वर्णी भवन मोराजी तथा प्रमुख समाज जनों के बीच यह कवर जारी किया गया। इस कार्य में डाक विभाग में सहायक निदेशक श्री चंद्रेश जैन का भी उल्लेखनीय योगदान रहा।

पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी जी द्वारा 1905 में वाराणसी में जैन घाट पर स्थापित श्री स्याद्वाद महाविद्यालय के छात्रों का स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में यहां के

विद्यार्थियों ने जो योगदान दिया वह अपने आप में गौरवशाली है। सन 1921 के असहयोग आंदोलन, सन 1932 के सत्याग्रह, सन 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में यहां के अनेक छात्रों ने अपनी अहम भूमिका निभाई है। सन 1942 जिसे हम अगस्त आंदोलन के नाम से जानते हैं, में तो यह विद्यालय विद्यार्थियों का शस्त्रागार ही बन गया था। यहां के अनेक छात्र इस आंदोलन में पिस्तौल आदि के रखने में जेल भेजे गए, रातों रात जागकर भूखे -प्यासे रहकर इस आंदोलन में यहाँ के छात्र पूरे समर्पण से कूद पड़े थे। 'रणभेरी' नाम से पर्चे छापकर वितरित करते हुए भी अनेक छात्र पकड़े गए फिर भी निराश नहीं हुये और आंदोलन में जुटे रहे। इस विद्यालय के संस्थापक गणेश प्रसाद वर्णी ने जबलपुर में अपनी चादर देश के खातिर नीलाम कर दी थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी इस विद्यालय से बहुत प्रभावित थे। इस तथ्य तथा सर्वांगीण योगदान को लेकर यह आवरण जारी हुआ है।

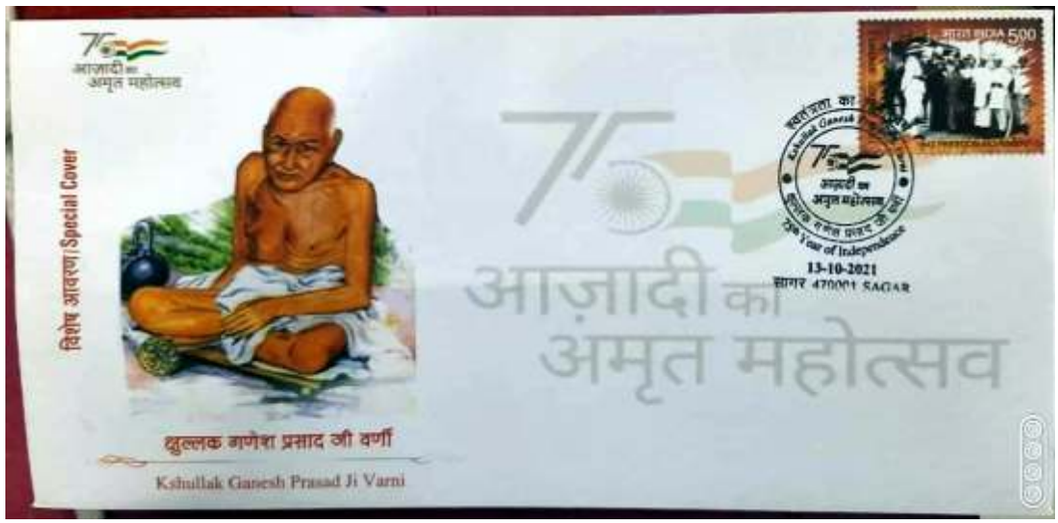

अगला प्रयास उनके ऊपर डाक टिकिट जारी करवाने का है। अतः आप सभी की सक्रियता, सहयोग जरूरी है, सकल जैन समाज एवं संस्कृति, वर्णी जी के उपकार से ही पल्लवित है । अतः उनके योगदान के लिए हमें अवश्य प्रयत्न करना चाहिए। उल्लेखनीय है कि गणेश प्रसाद जी वर्णी का जन्म सन् 1874 में उत्तर प्रदेश में ललितपुर जिला अन्तर्गत हंसेरा ग्राम (मड़ावरा के निकट) में एक वैष्णव परिवार में हुआ।

भगवान पार्श्वनाथ की समवशरण भूमि सिद्धक्षेत्र नैनागिरी में आयोजित होगा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की देशना/समवशरण स्थली व वरदत्तादि मुनिराजों की साधना तपस्या व निर्वाण भूमि श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र (रेशंदीगिरि) नैनागिरि जी में प.पू.108 आचार्य श्री उदारसागर जी महाराज ससंघ के मंगल सानिध्य एवं ब्र.जयनिशांत भैयाजी टीकमगढ़ के प्रतिष्ठाचार्यत्व में श्री 1008 श्री मज्जिनेंद्र सिद्ध जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ (नैनागिरि सहस्राब्दी समारोह 1050-2021 नवम प्रतिष्ठा महोत्सव) 20 से 25 नवम्बर 2021 तक विविध कार्यक्रमों के साथ आयोजित किया जा रहा है।

पंचकल्याणक महोत्सव समिति के महामंत्री राजेश जैन "रागी" पत्रकार बकस्वाहा ने बताया कि महोत्सव को भव्य आकर्षक सार्थक प्रभावी सफल बनाने के लिए समवशरण क्षेत्र की ऐरिया में निवासरत हमारे साधर्मी सहयोगी भाई बहिन, युवा कार्यकर्ताओं संगठनों की भी अहम महती भूमिका रहेंगी । कार्य व्यवस्थित हो इसके लिये कार्यविभाजन/कार्य आवंटन एवं कार्यकर्ता संयोजन तथा गतिविधियों की समीक्षा और गति के लिये आवश्यक बैठक आयोजित हो रही हैं। इसी क्रम में श्री पार्श्वनाथ दि.जैन छोटा मंदिर जी परिसर (जैन धर्मशाला) बकस्वाहा में 23 अक्टूबर 2021 शनिवार को दोपहर ठीक 01.00 बजे से आवश्यक बैठक रखी गई है।

पंचकल्याणक महोत्सव समिति के अध्यक्ष देवेन्द्र जैन "लुहारी" , सागर ने बताया कि बैठक का यह क्रम निरंतर चलता रहेगा, सप्ताह में 2 क्षेत्रों/ग्रामों में बैठक की जाने का प्रयास है।

भगवान पार्श्वनाथ की समवशरण भूमि है नैनागिरी : नैनागिर तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री सुरेश जैन आईएएस भोपाल ने बताया कि तीर्थ सदा ही सांस्कृतिक जीवन के आधार स्तंभ रहे हैं। हमारे धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन को तरोताजा रखने वाली रक्त शिरायें यहीं से होकर गुजरती हैं तथा हमारे लोक जीवन को जीवन्तता प्रदान करती हैं। ये ही वे ऊर्जा केन्द्र हैं, जो हमारे मन्द पड़ते उत्साह को बहाते रहते हैं। उसे प्रतिक्षण स्वच्छता, पवित्रता और निष्कलुषता के राजमार्ग पर अविचल / अडिग बनाते हैं।

यह महान तीर्थ भगवान पार्श्वनाथ की समवशरण भूमि है । वीतरागी साधुओं की तपोभूमि और उनके निर्वाण स्थल होने से यहाँ का कण - कण वंदनीय है। चौबीसी जिनालय में इन सिद्ध भगवन्तों की मनोज्ञ मूर्तियाँ विराजमान हैं। क्षेत्रराज पर 56 जिनालय हैं जिसमें 38 पहाड़ी पर, 16 मंदिर तलहटी में एवं 2 मंदिर पारस सरोवर में स्थित हैं। सबसे प्राचीन जिनालय संवत् 1107 तदनुसार ईसवीं 1050 का है। मुनिटोंग (मुन्डीटोरी) स्थित ऋषि वन में यहाँ से मोक्ष गये 5 मुनिराजों के चरण स्थापित हैं , इन्द्रवन में 6 आचार्यों के

चरण पादुका प्रतिष्ठित हैं।

पंचकल्याणक महोत्सव समिति एवं नैनागिरी तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट एवं प्रबंधकारिणी समिति महोत्सव की तैयारियों के लिए युद्ध स्तर पर जुटी हुई है। डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर ने बताया कि नैनागिरि जिसे लोकखण्ड नैनागढ़ भी कहता रहा है, एक ऐसा मनोज्ञ तीर्थ है जहाँ हमारे मन की आँखें अपने आप खुल जाती है और रोम - रोम में आत्मा का सुमधुर संगीत गूंजने लगता है। भगवान नेमिनाथ के काल में इस तपोभूमि नैनागिरि की सिद्धशिला से आचार्य वरदत्त और उनके संघस्थ चार मुनि इन्द्रदत्त, सायरदत्त, गुणदत्त और मुनीन्द्रदत्त मोक्ष पधारे । इस सिद्धशिला की शिखर पर स्थित गुफा में भीमबेटका की भांति चालीस हजार वर्ष पुराने शैल चित्र प्राप्त हुए हैं। पुराणों में यह उल्लेख किया गया है कि इसके समीपस्थ कुण्ड में स्नान करने से मनोकामना पूर्ण होती है।

गणिनीप्रमुख आर्यिका 105 श्री ज्ञानमती माताजी के 70 वें संयम दिवस व 88 वीं जन्मजयंती के अवसर पर हुआ संत सम्मेलन

विजय जैन, हस्तिनापुर

31 फुट उतुंग प्रथम चक्रवर्ती भगवान भरत मूर्ति के प्रांगण में 18 से 20 अक्टूबर तक शरद पूर्णिमा महोत्सव के रूप में गणिनी प्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का 70वां संयम दिवस व 88वीं जन्मजयन्ती पर 20 अक्टूबर शरद पूर्णिमा महोत्सव के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला जी भी उपस्थित रहे।

ज्ञानमती माताजी त्याग-तपस्या की मूर्ति – लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला

शुभ कार्यक्रम में लोकसभा स्पीकर ओम बिड़लाजी ने विराजमान महाराजों एवं आर्यिका माताजी का आशीर्वाद प्राप्त कर कहा कि त्याग और तपस्या की मूर्ति हैं ज्ञानमति माताजी जिन्होंने 70 साल के संयममय जीवन में देश भर का भ्रमण कर मानव कल्याण और मानव जीवन के मार्ग को प्रशस्त किया। 70 साल पहले सांसारिक जीवन को त्यागकर तीर्थंकरों के बताये मार्ग पर चलीं माताजी का 70वां संयम दिवस है। उन्होंने करोड़ों लोगों के जीवन को बदलने का प्रयत्न किया। महावीर स्वामी के अहिंसा व सत्य के मार्ग पर चलकर ही आज समाज को सही दिशा में ला सकते हैं। विपत्ति के समय जैन समाज ने हमेशा सहयोग में आगे बढ़कर भूमिका निभाई है, चाहे वो क्षेत्र हो चिकित्सा का या शिक्षा का, अन्न की जरूरत या अन्य सेवा की।

यह मेरा नहीं, संयम - ज्ञान की अनुमोदना है – ज्ञानमती माताजी

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने कहा कि एक घंटे का मुनि भी पूज्य है। इस अवसर पर विभिन्न संतों ने जो गुणानवाद किया, वह मेरा नहीं, वह तो संयम और ज्ञान की अनुमोदना कर रहे हैं। उन्होंने वैष्णव समाज के वायु पुराण, भागवत, अग्नि पुराण आदि के उल्लेख कर स्पष्ट किया कि **प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र चक्रवर्ती भरत के नाम पर ही हमारे देश का नाम भारत पड़ा, और ऐसे 22 प्रमाण हैं।** उन्होंने कहा कि अहिंसा से ही पर्यावरण की शुद्धि हो सकती है। अहिंसा प्रधान भारत की संस्कृति शाकाहार व उच्च विचारों की है।

आचार्य श्री अनेकांत सागरजी ने इस अवसर पर 88 किलो के लाडू से गणिनी आर्यिका श्री का अभिनंदन किया।

आचार्य श्री सौभाग्य सागरजी ने अपने बीते जीवन का अनुभव बताते हुए

कहा कि जब छोटा था, तो मां ने हाथ में पुस्तक थमाई 'बाल विकास', फिर दीक्षा के समय आचार्य श्री सिद्धांत सागर ने पुस्तक दी 'मुनि चर्या' और उसके कुछ वर्ष बाद गुरुजी ने ग्रंथ दिया 'मूलाचार' – ये तीनों ही ज्ञानमती माताजी के लिखे हुए थे। उन्होंने स्पष्ट कहा कि परम्परायें नहीं तोड़नी चाहिए, प्राचीन परम्परा का विध्वंस नहीं होना चाहिए।

आचार्य श्री प्रज्ञ सागरजी ने कहा कि आदिनाथ से आज तक शास्त्रों को लिखने की परम्परा आचार्यों की थीं पर 20वीं व 21वीं सदी में आर्यिकाओं ने लेखन शुरू किया और उनमें ज्ञानमती माताजी सबसे अग्रणी हैं।

उन्होंने मल्लिनाथ जी और नमिनाथजी की जन्मस्थली जनकपुरी (बिहार) के विकास की अपील की तब स्वामी रवीन्द्र कीर्ति ने बताया कि वहां का काम चल रहा है और आगामी जनवरी में पंचकल्याणक भी हो रहा है वहां सवा ग्यारह फुट की पद्मासन प्रतिमा स्थापित की जा रही है।

आचार्य श्री विभक्त सागरजी ने कहा कि आज हर घर में एक जिनवाणी और शास्त्र जरूर स्थापित करें। आज युवा विमुख हो रहा है, क्योंकि पहले माता-पिता ने दबाव के साथ संस्कार नहीं दिये और अब साधु लोगों का ध्यान नहीं है। मंदिरों की स्थापना हो रही है पर मंदिरों में पूजा-आराधना कौन करेगा इस पर ध्यान नहीं है। जगह-जगह पाठशालायें लगानी चाहिये।

आचार्य श्री अतिवीरजी ने कहा कि एक नदी शांति सागरजी - वीर सागरजी रूपी पर्वत से निकली और जिसने अनेक तीर्थों को संचित किया वह नदी है ज्ञानमती माताजी। 16 वर्ष की उम्र में क्षणिक और शाश्वत सुख का भेद जान लिया। जब युवा व्यसन की ओर मुड़ते हैं तब इन्होंने पूजा की थाली पकड़ ली। पुरुष प्रधान समाज में माताजी ने अपवाद के रूप में शिखर पर पहुंच कर वंदनीय स्थान बनाया है। मुनियों के पीछे तो 'सागर' लग जाता है पर माता जी के पीछे नहीं लगा किंतु वह भी एक सागर हैं। जैसे वैष्णव धर्म में चार धाम की यात्रा होती है ऐसे ही जैन धर्म में दक्षिण में बाहुबली, मध्य भारत में ऋषभनाथ और अब अयोध्या में भरत भगवान की प्रतिमा स्थापित हो जाये तो जैन धर्म में भी

तीन धाम की यात्रा हो जाएगी।

मुनि श्री विभंजन सागरजी ने कहा कि आप लोग बर्थ डे के रूप में व्यर्थ डे मनाते हैं और जो कुछ यादगार कार्य करते हैं उनकी जन्म जयंती – संयम महोत्सव मनाये जाते हैं। ज्ञानमती माताजी ने 500 से ज्यादा ग्रंथों की रचना ही नहीं की बल्कि अनेक त्यागी-व्रतियों को अध्ययन भी कराया उनमें से कुछ तो आज मुनि से आचार्य पद पर आसीन हैं।

मुनि श्री अनुमान सागरजी ने कहा कि सबसे वयोवृद्ध और सबसे लम्बी दीक्षा वाली माताजी के जीवन को जीवंत रखने के लिये देश में भरत चक्रवर्ती भगवान की 108 प्रतिमायें विराजमान करनी चाहिए।

मुनि श्री प्रथमानंद जी ने कहा कि धर्म के प्रसार में, तीर्थों के निर्माण में कलम से रचनाओं का लेखन कर चहुंमुखी विकास किया।

आर्यिका श्री चन्द्रमति माताजी ने कहा कि 1996 में माताजी के दर्शन मांगीतुंगी में हुए। उसके बाद 25 वर्ष बाद अब दर्शन पाकर धन्य हो गई। माताजी चन्द्रमा की भांति शांति का अनुभव कराती हैं। जब माताजी तीर्थंकर बनें तब हम उनके चरणों में गणधर बनकर धर्म का प्रसार कर सकें।

क्षुल्लक श्री योगभूषण जी ने कहा कि ऐसे संत सम्मेलनों से जिन धर्म की प्रभावना का शंखनाद समय-समय पर होना चाहिए। आज समाज को नेतृत्व की तलाश है। माताजी ने जो कार्य किये वो आगामी 50-100 सालों में शायद कोई संत आगे न कर सके।

माताजी के ८८ वे जन्म जयंती समारोह में लोकसभा सभापती माननीय श्री ओम बिलड़ा का स्वागत, पीठाधीश एवं मूर्ति निर्माण कमेटी के अध्यक्ष स्वस्तीश्री रवीद्रकीर्ति स्वामीजी, तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी मुरादाबाद के कुलाधिपति श्री सुरेश जैन, मूर्ति निर्माण कमेटी के कार्याध्यक्ष श्री अनिल जैन, अधिष्ठाता सी आर पाटील, तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष एवं भ. ऋषभदेव १०८ फीट मूर्ति निर्माण कमेटी मांगीतुंगी के महामंत्री श्री संजय पापडीवाल, कोषाध्यक्ष श्री प्रमोद कासलीवाल, विश्वस्त श्री भूषण कासलीवाल, डॉ. जीवनप्रकाश जैन, श्री कमल कासलीवाल, श्री चंद्रशेखर कासलीवाल एवं समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत महासंघ के कार्यध्यक्ष एवं जैन तीर्थवंदना के संपादक डॉ.अनुपम जैन, इंदौर ने किया। दीप प्रज्ज्वलन श्री हेमचंद जैन परिवार ने व मंच संचालन की कमान आर्यिका चन्दनामति माताजी, स्वामी रवीन्द्र कीर्तिजी व डॉ. जीवन प्रकाश जैन ने संयुक्त रूप से संभाली। माताजी को नई पिच्छी पारस चैनल परिवार ने भेंट की। विभिन्न क्षेत्रों से आये अतिथियों का उचित सम्मान किया गया।

प्रमोद जैन जी को सौंपी दिल्ली की कमान - सभी साधु संतों ने मंच व मंच के सामने बैठे भक्तों की स्वीकृति लेते हुये दिल्ली में दिगम्बर जैन समाज की कमान श्री प्रमोद जैन मॉडल टाउन को सौंपी। उन्हें अपनी टीम बनाने के लिये दो माह का समय दिया और एक जनवरी 2022 को उसकी विधिवत घोषणा की तिथि नियत की।

पर्यटकस्थल गोवा के पोंडा नगर में पर आचार्यश्री विद्यासागर कीर्ति स्तंभ एवं आचार्यश्री विद्यासागर संत भवन का शिलान्यास समारोह सम्पन्न

भारत के पर्यटकस्थल में प्रमुख निसर्ग हरियाली से सुसज्जित देव भूमि जहां पर हजारो सालों का जैन इतिहास भरा पड़ा है उत्कृष्ट स्थान जहां पर पूरी दुनिया के लोग देखने आते है ऐसे गोवा राज्य के बीचो बीच स्थित पोंडा नगर में शिलान्यास समारोह कार्यक्रम संपन्न हुआ ।

१५ अक्टूबर को प्रातः काल के शुभ मुहूर्त में आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज के संयम स्वर्ण महोत्सव के पावन अवसर पर आचार्य विद्यासागर कीर्ति स्तंभ ओर आचार्य श्री विद्यासागर संत भवन का शिलान्यास किया गया।

आचार्य श्री के परम शिष्य बाल ब्रम्हचारी सुनील भैया जी और ब्र. पदम भैया जी, नितल भैया जी के पावन सान्निध्य में विजय दशमी के अवसर पर समस्त क्रियाये संपन्न हुई ।

कीर्तिस्तम्भ एवं संतभवन के पुण्यार्जक - आचार्य श्री के आज्ञाकारी शिष्य श्री चन्द्रकान्त भोजे पाटिल पत्नी श्रीमती अर्चना जैन, पुत्र सम्मेद पाटिल परिवार रहा साथ ही सदलगा से श्री महावीर भैया, श्री अक्षय अष्टगे उपस्थित रहे गोवा में श्री आदिनाथ दिगंम्बर जैन मंदिर मडगांव एवं श्री

शांतिनाथ दिगंम्बर जैन मंदिर पोंडा में स्थित है।

आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के ७५वीं जन्मजयंती महोत्सव पर जीवदया गौ सेवा सम्मान योजना के अंतर्गत पुरस्कार वितरण एवं सम्मान समारोह सम्पन्न

म.प्र. के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने श्री फल भेंट कर आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया

जबलपुर तिलवारा दयोदय तीर्थ में विराजमान आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज का ७५ वीं जन्मजयन्ती महोत्सव भक्तों ने बड़े ही धूम-धाम एवं भक्ति के साथ मनाया। इस अवसर पर म.प्र. के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान आचार्य श्री का आशीर्वाद लेने जबलपुर तिलवारा घाट में उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री ने आचार्य श्री के चरणों में श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

संतशिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज जी का इस धरती पर अवतरण हम सबके भवतरण के लिए हुआ है : मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य श्री ने मानव कल्याण, दया, परोपकार और सेवा का जो मार्ग दिखाया है, उसी से देश और समाज प्रगति कर सकता है। इसी संदर्भ में आगे कहा कि जैन शब्द एक धर्म विशेष के लिए नहीं है। जो खुद पर विजय प्राप्त करले वही जैन होता है।उन्होंने आचार्य श्री को जन्मदिन की शुभकामनायें देते हुए कहा वे सौभाग्यशाली हैं, जो आचार्य भगवान के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जीव दया का जो भाव, एक तरफ मूक माटी और दूसरी तरफ मूक वो, जिनमें जान तो है, लेकिन बोल नहीं पाते हैं। ऐसी गौ माता के संरक्षण के लिए जो काम आचार्य श्री कर रहे हैं, वो सचमुच में अद्भुत है।

आचार्य श्री के जन्ममहोत्सव के अवसर पर विद्यासागर जीव दया गौसेवा सम्मान व पुरस्कार वितरण समारोह भी संपन्न हुआ।इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री द्वारा गोसेवकों व गोसेवा करने वाली संस्थाओं को पुरस्कार प्रदान किये गये। सागर के 'आचार्य श्री विद्यासागर गो संवर्धन संस्थान' को पांच लाख रूपये के प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर मध्यप्रदेश गोवंश संवर्धन बोर्ड के अध्यक्ष महामंडलेश्वर अखिलश्वरानंद गिरि भी उपस्थित रहे तथा देश भर से भक्तगणों ने उपस्थित होकर आचार्य श्री का आशीर्वाद प्राप्त किया।

गोशालाओं को बनाना होगा स्वावलंबी - मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान

शिवराज सिंह चौहान ने अपने व्यक्तव्य में कहा कि सरकार गो संवर्धन के लिए कोई कसार नहीं छोड़ेगी ।लेकिन समाज को भी इसमें सहयोग देना होगा ।उन्होंने गो ग्रास के रूप में लोगों को कुछ – न – कुछ सहयोग करने का आग्रह किया। श्री चौहान ने कहा उत्पादों से गोशालाओं को स्वावलंबी बनाना भी जरुरी है।

शरद पूर्णिमा पर निकले एक साथ दो चांद भारतीय संस्कृति एवं दर्शनशास्त्र की अमूल्य धरोहर हैं

- अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज

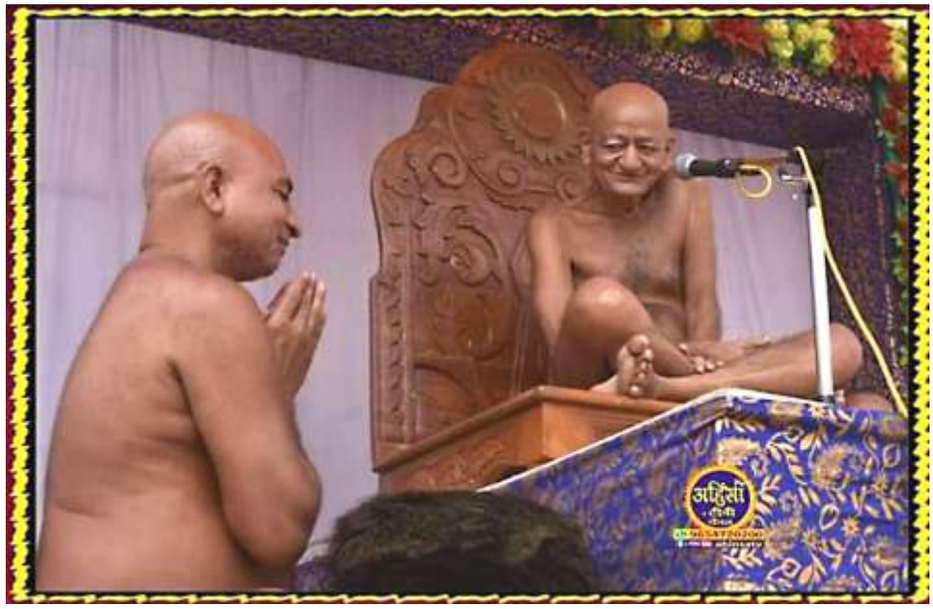

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज किसी धर्म, वेश, परंपरा या किसी महापुरुष का नाम नहीं- वरन-जीवन की खुली किताब का नाम है। हमें लगता है कि दुनिया के महान संत, समाज सेवक, फकीर, दार्शनिक, अध्यात्मिक नेता, विकास पुरुष, योजनाविद, शिक्षाविद, अर्थशास्त्री, नीति निर्माता, प्रबंधन गुरू, राष्ट्र निर्माता, शांति के मसीहा, क्रांतिकारी विचारों वाली विभूतियों को मिलाकर, भगवान से कहा जाए इस रत्नगर्भा वसुन्धरा पर कोई ऐसी रचना करें जो अलौकिक, अद्वितीय और अनूठी हो। तो वह कृति, निश्चय ही आचार्य विद्यासागर जी महाराज जी होंगे। सौम्य स्मित मुद्रा, ललाट पर साधना की जगमगाहट, मुख मंडल पर प्रशांति का अज्रस प्रभाव, प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सर्वथा तनाव का अभाव, निर्भय के निरूप, साहस के शूर, स्वाभिमान की शिखर, दृढ़ता से मुखर, आर्य पुरुषों में श्रेष्ठ, प्रसिद्ध मूलाचार और सिद्ध समयसार, विश्व हित चिंतक, जीवन शिल्पी, कल्याण मित्र, समता समाधान दाता, सृजन धर्मी, अविराम यात्री, गतिशील साधक, हित संपादक, श्रुत आराधक, न्याय तीर्थ, चारित्र ध्वजवाहक, तप संघर्षी, अनुसंधानी, सद्गुणों के समुद्र, धर्म प्रभाकर, महा यशस्वी, जैन संस्कृति के उद्भत, जैन शासन के सजग प्रहरी, अनंत आस्था के आयाम, उन्नत प्रशस्त भाल, अजातशत्रु, अमृत पुरुष, संयम सूर्य, संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के युगल चरणों में, सिद्ध भक्ति- श्रुतभक्ति, और आचार्य भक्ति- सहित अनंत प्रणाम। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।

आर्षप्रज्ञ, परमगुरु चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जीकी दिव्य शक्ति- आचार्य श्री वीर सागर जी की प्रखर पुण्यवत्ता, असीम वत्सलता से अनुप्राणित, निर्विकारता, तपस्विता और तेजस्विता एवं गुरु दृष्टि की सम्यक आराधिका, उत्कृष्ट साहित्य लेखिका, कला, ऋजुता, मृदुता, वात्सल्यता, सहिष्णुता, संवेदनशीलता, सकारात्मकता, सृजनशीलता, और वस्तुनिष्ठता का मणिकांचन योग, स्वाभाविकता में स्फूर्त हुआ है। गणिनी प्रमुखा आर्यिका शिरोमणि १०५ ज्ञानमती माताजी के70 वे संयम दिवस एवं 88 वे आविर्भाव दिवस के पुण्यशाली अवसर पर, मेरे अंतस की गहराई से उपजी वात्सल्य भावधारा से सिक्त शुभेक्षा अभिव्यक्त है, और संप्रेषित है, उनके सुदीर्घ, स्वस्थ एवं कल्याणकारी आध्यात्मिक जीवन के लिए अनंत शुभांशसायें।

आपके जीवन में एकाग्रता, नियमितता, पापभीरूता, दृढ़ संकल्पता, ममतामई वात्सल्याशीलता, सहिष्णुता, परिश्रोन्मुखता, सुरभित होते हैं।

जो तीर्थंकरों की जन्मस्थली के अद्भुत तथा श्री-युक्त विकास में लक्षित हुई है। लक्ष्य की निर्धारण, नया करने व सीखने की ललक, सकारात्मक चिंतन, योजना का निर्धारण, आलोचना का प्रतिकार, समभाव और सहिष्णुता की संयम शील साधना से, अपने सृजन को आध्यात्मिक और अकादमिक जगत के बीच श्रद्धाशील, पठन की निमित्त बनाने में सहजता पूर्वक आप सफल हुई हैं। आपके विचार युगों-युगों तक जन-जन की प्रमाद मूर्छा तोड़े, उन्हें गतिशील बनाते रहे और उन्हें एक अधिक सभ्य और शालीन समाज की निर्मिति की भूमिका में योगदान देने की प्रेरणा देती रहें, यही आपके 70 वे संयम दिवस एवं 88 वें आविर्भाव दिवस के सुमंगलकारी अवसर पर मेरी अनंत शुभाशंसायें हैं एवं आपके उत्तम स्वास्थ्य की मनोकामना करते हुए प्रभु चरणों में प्रार्थना है, कि जैन धर्म के प्रचार प्रसार में उनके योगदान चतुर्दिक योग भूत बने। गणिनी प्रमुखा आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी को शुभ आशीष सहित।

अतिशयक्षेत्र बंधा जी में विराजमान पंचऋषियों से आशीर्वाद प्राप्त करने पहुंचें म.प्र. के मुख्यमंत्री

२३ अक्टूबर २०२१ को श्री 1008 दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बंधाजी में चातुर्मासरत मुनिश्री विमलसागर संसघ के चरणों में श्रीफल भेंट कर म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आशीर्वाद प्राप्त किया । पहाड़ियों के मध्य जैन पुरातत्व कला का उत्कृष्ट स्थान अतिशय क्षेत्र बंधाजी है, जहां सहस्त्रों वर्षों से जैन धर्म की ज्योति निर्बाध रूप से जलती आ रही है। अतिशय क्षेत्र बंधाजी में पंच ऋषिराजों का चातुर्मास चल रहा है।

मैं मुख्यमंत्री के रूप में नहीं, गुरुभक्त बनकर बंधा जी के अजितनाथ भगवान और मुनिराजों के चरणों की धूल अपने माथे पर लगाने आया हूं - शिवराज सिंह चौहान

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान मध्यप्रदेश शासन भोपाल एवं माननीय श्री विश्वास जी सारंग मंत्री मध्य प्रदेश शासन भोपाल, प्रभारी मंत्री जिला टीकमगढ़ श्री अनिल कुमार जैन, विधायक निवाड़ी श्री राकेश ज, गिरी, विधायक टीकमगढ़ श्री मुकेश सिंह, मध्य प्रदेश संगठन प्रभारी श्री अमित कुमार जैन नुनाजी, भाजपा जिला अध्यक्ष टीकमगढ़ श्री अखिलेश अयाची, जिला अध्यक्ष निवाड़ी श्री गणेशी लाल नायक, वरिष्ठ नेता भाजपा श्री मानसिंह दांगी, मंडल अध्यक्ष श्री मोहनगढ़ और भी कई राजनेताओं ने एवं मध्यप्रदेश के कई अधिकारियों ने और हजारों की संख्या में जनता जनार्दन ने भारत के सुप्रसिद्ध बुंदेलखंड के हृदय स्थल में अपनी प्राचीनता को लिए सैकड़ों अतिशयों से युक्त वह पावन क्षेत्र जहां पर विराजमान चेतन का चमत्कारी महा अतिशयकारी, मनोहारी, सांवलिया श्री 1008 अजितनाथ भगवान बंधाजी वाले बाबा के दर्शन एवं शाम की महाआरती में सम्मिलित होने का सौभाग्य लिया और बंधा जी की पावन धरा पर चातुर्मास कर रहे परमपूज्य संत शिरोमणि आचार्यश्री 108 विद्यासागर जी महाराज के आज्ञानुवर्ती शिष्य मुनिश्री 108 विमल सागर जी महाराज, मुनिश्री 108 अनन्त सागर जी महाराज, मुनिश्री 108 धर्म सागर जी महाराज, मुनिश्री 108 अचल सागर जी महाराज, मुनिश्री 108 भाव सागर जी महाराज के चरणों की वंदना की और मुनिसंघ से वार्ता की और आशीर्वाद लिया।

क्षेत्र के अध्यक्ष चौधरी श्री मुरली मनोहर जैन ने अपनी भावनाओं को रखते हुए क्षेत्र को तीर्थंकर सर्किट में होने वाली समस्त सुविधाओं को बधाजी क्षेत्र पर करवाने की बात रखी, जैसे कि रोड नाली निर्माण, वाहन पार्किंग क्षेत्र परिसर में तीर्थंकर पार्क, आचार्य विद्यासागर जी उपवन महावीर उद्यान पार्क आदि की मांग रखी और साधु संतों को जंगल जाने के लिए 40 एकड़ जमीन को क्षेत्र के नाम से लीज बनवा कर देने की बात रखी।

बम्होरी बराना से बंधा जी के लिए चौड़ीकरण करके आरसीसी रोड बनवाने, बंधा जी गांव में एक सुंदर बस स्टैंड रेस्ट हाउस बाजार मार्केट और पठार पर स्थित बहादुरपुर भाटा में 5 किलोमीटर के क्षेत्र में मुनि राज्यों को जंगल जाने के लिए विचरण करने के लिए जमीन क्षेत्र के लिए लीज पर लेने की बात रखी। बंधाजी ग्राम वासियों के लिए तालाब भरवाने की और गोवंश के लिए व्यवस्थित गौशाला बनवाने, क्षेत्रवासियों के लिए एक सौ

पलंग की व्यवस्थित अस्पताल बनवाने की बात रखी।

बगैर माइक मंच के आचार्य संहिता का पालन करते हुए टीकमगढ़ जिला अध्यक्ष श्री अमित नुना ने क्षेत्रीय अध्यक्ष की मांगो को ध्यान में रखते हुए क्षेत्र के विकास कराने का बीड़ा उठाते हुए कहा कि अब बंधा देश-विदेश मैं अपना झंडा फहराएगा और शासन प्रशासन पूरा ध्यान देकर 5 तारीख के बाद काम करवाएगा।

प्रदेश के मुखिया माननीय शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि मेरा जीवन आज धन्य हो गया जो मैंने ऐसे दुर्लभ दर्शन किए वास्तव में बंधाजी क्षेत्र के बारे में जो 16 तारीख को श्री मुरली जी (अध्यक्ष) ने एवं निर्माण कमेटी प्रमुख श्री अक्षय रसिया मड़ावरा ने भोपाल में आकर जो अतिशय बताया था, यहां उससे भी अधिक शांति और ऊर्जा का अनुभव किया है। आज प्रतिमा का तेज, चमत्कार देख रहे है वह युगों-युगों तक साथ देने वाला है, में आप सभी को वचन देकर जाता हूँ.."मैं जल्द ही पूरे परिवार सहित आकर इस क्षेत्र पर पूजन विधान करूंगा और इस क्षेत्र के विकास में कोई कमी नहीं छोडूंगा.!""

इतना ही नही मुख्यमंत्री ने आचार्य श्री को याद करते हुए कहा... कि पूज्य आचार्य भगवन ने वास्तव में इस क्षेत्र को गोद लेकर विश्व के पहले रजत मन्दिर को बनाने का सपना सजोंकर हमारे पूरे मध्यप्रदेश पर उपकार किया है। मुझे अभी पता नहीं था कि मध्य प्रदेश में ऐसे चैतन्य चमत्कारी अजितनाथ भगवान विराजमान है, आज दर्शन करते ही मैं इस जगह से जन्म जन्म जन्मांतरओं के लिए बंध गया हूँ।

बुंदेलखंड के प्राचीन एवं प्रसिद्ध जैन तीर्थ बंधाजी में गत दिनों दसलक्षण महापर्व के पावन अवसर पर इतिहास में प्रथम बार 170 मंडलीय समवशरण महामंडल विधान, विश्वशांति महायज्ञ एवं आध्यात्मिक संस्कार शिविर का आयोजन मुनि श्री 108 विमल सागर जी सहित पंच मुनिराजो के सानिध्य में संपन्न हुआ है। जिसमें 167 छोटे समवशरण बनाए गए थे एवं पंच मुनिराजों ने समवशरण में बैठकर प्रवचन कर धर्मोपदेश दिया था ।

कुंडलपुर क्षेत्र कमेटी एवं दमोह जिले की जैन समाज ने आचार्य श्री को कुंडलपुर आगमन हेतु श्रीफल अर्पित किया

फरवरी 2021 में सिद्धक्षेत्र कुंडलपुर में शुरू होने जा रहा पंचकल्याणक महामहोत्सव

कुण्डलपुर में पंचकल्याणक महोत्सव हेतु सम्पूर्ण दमोह जिले कि जैन समाज ने जबलपुर पहुँचकर ऐतिहासिक रूप से आचार्य श्री के ससंघ कुण्डलपुर मंगल आगमन हेतु श्रीफल अर्पित किया बहुत बड़ी संख्या लगभग 2000 टोपी लगाये श्रद्धालुओं ने विशाल श्रीफल अर्पित कर अपनी सहभागिता दर्ज की । दमोह जिले की जैन समाज प्रथम बार इस तरह संगठित होकर इतनी बड़ी संख्या में श्रीफल अर्पित करने पहुंची । कुंडलपुर के बड़े बाबा एवं छोटे बाबा की जयकारों से तिलवारा घाट गुंजायमान हो उठा । भक्तजनों ने भक्ति भाव से आचार्य श्री की चरण वंदना की। इसके पश्चात् दमोह, पथरिया, हटा, पटेरा, तेंदुखेडा, जवेरा, नोहटा, अभाना, बनवार, झलौन,

झापन, कुम्हारी, बांदकपुर, हिन्डोरिया तारादेही, नरसिंहगढ़, केरवना , खडेरी आदि स्थानों से बड़ी संख्या में आये श्रद्धालुओं के प्रतिनिधियों ने श्रीफल समर्पित किये।

कुंडलपुर क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री संतोष सिंघई एवं समस्त पदाधिकारियों के अलावा दमोह की दिगंबर जैन पंचायत, जैन मिलन, जैन सेवा दल, शाकाहार उपासना परिसंघ एवं दमोह की विभिन्न जैन मंदिरों के आसामी गण भी बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर अतिप्रसन्न मुद्रा में आचार्य श्री विद्यासागर जी ने उपस्थित जनसमुदाय को अपना भरपूर आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि कुण्डलपुर में महामहोत्सव हेतु सभी को बहुत उत्साह के साथ तैयार रहना चाहिए । कुण्डलपुर में एक ऐतिहासिक महोत्सव होने जा रहा है जिसमें अनेक साधुजन सम्मिलित होगें तथा नए दीक्षार्थी भी सामने आयेंगे उन्होंने कहा कि अभी तक कुण्डलपुर में लिया गया है लेकिन अब देने का समय आ गया है । दुसरे विकसित हो रहे क्षेत्रों को अब दान राशि दी जानी चाहिए।

मुख्यमंत्री शिवराज ने सरकार की ओर से दिया पूर्ण सहयोग का आश्वासन

कुंडलपुर में बड़े बाबा के निर्मित हो रहे विशाल भव्य मंदिर के पूर्ण होने पर

आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से आगामी फरवरी माह में पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव तैयारियाँ प्रारंभ हो गयी हैं । इसी को लेकर 16 अक्टूबर को दमोह से भोपाल पहुंचे कुंडलपुर कमेटी के पदाधिकारियों ने अध्यक्ष श्री संतोष सिंघई के नेतृत्व में म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान से भेंट एवं मुलाक़ात की एवं उन्हें विस्तार से आयोजन के सन्दर्भ में जानकारी भी दी । मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कुण्डलपुर में हो रहे ऐतिहासिक पंचकल्याणक महोत्सव में शासन और प्रशासन की ओर से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

शाश्वत तीर्थक्षेत्र सम्मेदशिखर जी में होगा भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

8 से 13 दिसम्बर तक होगा ऐतिहासिक आयोजन

बुंदेलखंड को गौरवान्वित करेगा बुंदेलखंड भवन

- डॉ. सुनील जैन संचय

सम्मेदशिखर। सम्मेद शिखरजी भारत के झारखंड राज्य के गिरिडीह ज़िले में स्थित महत्वपूर्ण जैन तीर्थ स्थल है। 'श्री सम्मेद शिखरजी' के रूप में चर्चित इस पुण्य क्षेत्र में जैन धर्म के 24 में से 20 तीर्थंकरों ने मोक्ष की प्राप्ति की। ऐसी पवित्र पावन भूमि पर नव निर्मित बुंदेलखंड भवन परिसर में आगामी 8 दिसम्बर 2021 से 13 दिसम्बर तक भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव परम पूज्य आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के मङ्गल ससंघ सान्निध्य में होने जा रहा है।

मीडिया प्रभारी डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर ने बताया कि सम्मेद शिखर में निर्मित बुंदेलखंड भवन व जिनालय पूरे बुंदेलखंड के लिए गौरवशाली है।

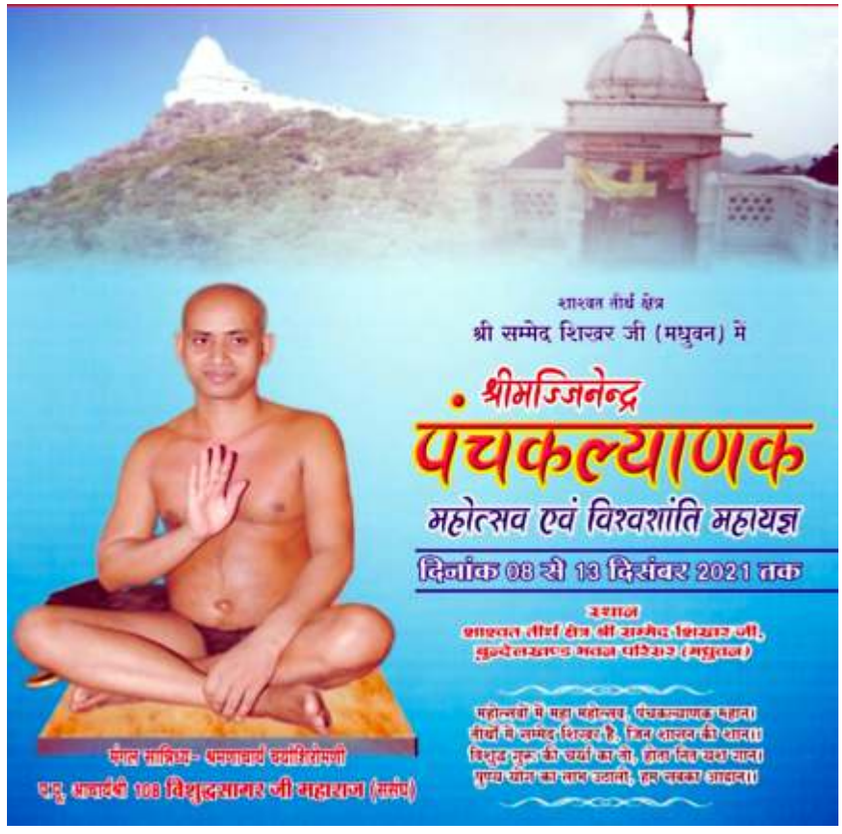

यह जिनालय और भवन बुंदेलखंड में निवासरत जैन समाज का एक ऐसा स्वप्न है जो दशकों पहले संजोया गया था और काफी प्रतिकूलताओं का सामना करते हुए आज यह मूर्त रूप लेता नजर आ रहा है।

बुन्देलखण्ड में जैन समाज सदियों से निवासरत है और जैन धर्म की मूलचर्या का संरक्षण किये हुए है । हमारे तीर्थंकर भगवंतों की आगमानुसार स्थाई निर्वाण भूमि शाश्वत् तीर्थ क्षेत्र श्री सम्मेद शिखरजी प्रत्येक जैनी के हृदय में बसता है । आवागमन के सुलभ होते साधनों के चलते आज श्री सम्मेद शिखरजी पहुँचने वाले यात्रियों में एक बहुत बड़ा हिस्सा हमारे बुन्देलखण्ड के श्रद्धालुओं का होता है । श्री सम्मेद शिखरजी में हम बुन्देलखण्ड वासियों की श्रद्धा और पहचान को जीवंत सिद्ध करने और अपनी मूल चर्याओं का निर्वहन करने हेतु , बाहर से पधारे हुए यात्रियों की सुविधाओं हेतु इस शाश्वत् भूमि पर एक भव्य बुन्देलखण्ड भवन एवं एक नयनाभिराम जिनमंदिर के निर्माण का स्वप्न देखा गया । तदोपरांत लगभग 20,000 वर्गफुट भूमि को क्रय करके निर्माण कार्य प्रारंभ कराया गया । विगत 5 वर्ष पूर्व भव्य जिनालय का शिलान्यास हुआ तथा आज मंदिर जी की वेदी के शिलान्यास के साथ जिनालय अपनी पूर्णत : की ओर तेजी से अग्रसर है।

बुंदेलखंड भवन के संयोजक अमित चौधरी ने बताया कि श्री सम्मेद शिखर जी की तलहटी में बसे मधुबन में, थाने के बाजू से, लगभग 20000 वर्ग फीट जमीन पर आकार ले रहा है एक अत्यंत रमणीय भगवन चंद्रप्रभ का जिनालय और बुंदेलखंड भवन।

इस ऐतेहासिक कार्ययोजना में अपनी सदस्यता दर्ज कराकर अतिशय पुण्य का संचय करें और आपकी सहभागिता एवं सक्रियता से हमारी आगे आने वाली पीढ़ियों का भी क्षेत्र से भावनात्मक लगाव बना रहेगा तथा यह हमारे तीर्थ संरक्षण सहायक होगा । विनम्र अनुरोध है कि ऐसे शाश्वत् तीर्थ क्षेत्र पर बन रहे जिन मंदिर में एवं समूचे बुन्देलखण्ड का गौरव ' बुन्देलखण्ड भवन ' में अपने खुले मन से अपनी चंचला लक्ष्मी का उपयोग कर पुण्य लाभ अर्जित करें।

स्वप्न पूरी समाज का पूरी समाज के लिए, समाज के अग्रजों द्वारा। और अब आगामी दिसंबर माह में समय आ ही गया जब चर्या शिरोमणि 108 आचार्य विशुद्ध सागरजी महराज के ससंघ सानिध्य में, हम हमारे पुण्य के उस चरम पर पहुंच पाएंगे के भगवान के पंचकल्याणक करने करवाने का अवसर पा हम शाश्वत भूमि पर अपनी अमिट पहचान दर्ज कर पाएंगे। शीघ्र ही भवन भी अपना स्वरूप लेने लगेगा। सभी अपनी सहभागिता उचित रूप से सुनिश्चित कर समाज के यश के साथी बनें।

बुंदेलखंड भवन सम्मेदशिखर जी के पदाधिकारियों ने बताया कि कार्य युद्धतर पर जारी है, जो पंचकल्याणक के पहले काफी हद तक अंदर का काम पूरा कर लिया जाएगा।

श्री दिगम्बर जिनालयम् चिन्नातुंबलम्

- सुरेश जैन पेद्दाहोठुर

चिन्नातुंबलम् गांव आंध्रप्रदेश के करनूल जिले में अडोनी-रायचूर रोड़ पर अडोनी से 20 किमी दूरी पर मेन रोड़ से 2 किमी अंदर गांव में है, इस गांव में 8वीं शताब्दी के आसपास राष्ट्रकूट राजाओं के समय का पुराना मंदिर है,उस समय जैन-धर्म यहां का राजधर्म था, सभी लोग यहां जैन ही थे। चिन्नातुंबलम् और पेद्दातुंबलम् यह दोनों गांव प्राचीन समय में पूर्णतःजैन गांव थे। यहां से अनेकों मूर्तियां निकली हैं जो चेन्नई म्यूजियम में रखी हुई है, पेद्दतुंबलम् में श्वेतांबर समाज ने पार्श्वनाथ तीर्थंकर की मूर्ति लेकर बहुत बड़ा तीर्थ बनालिया है।

चिन्नातुबंलम् गांव का जिनालय वर्तमान में जर्जर अवस्था में है, मंदिर का शिखर निकल गया है,और दीवारों के पत्थर आदि टूटने की हालत में हैं, मंदिर के स्तंभ चालुक्य शैली के बने हुए दिखते हैं। मंदिर में अभी भी प्रतिमाएं हैं,बाहर द्वारपालक का अंकन व गर्भगुड़ी में कायोत्सर्ग व पद्मासन मुद्रा में तीर्थंकर प्रतिमा के साथ चंवरधारी द्वारपाल की मूर्ति भी है, प्रतिमा जी बहुत सुंदर व प्राचीन है, यह मंदिर पुरातत्व विभाग कि सूची में दर्ज है पर विभाग ध्यान नहीं दे रहा। पुरातत्व विभाग की वरिष्ठ अधिकारी असिस्टेंट डायरेक्टर रजिता मैडम ने भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के निवेदन पर 30 अक्टूबर को आकर मंदिर का निरीक्षण किया और आगे का सर्वे आदि करने के लिए उचित अधिकारियों को कहा साथ ही तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा लगाए हुए बोर्ड को देखकर बहुत प्रसन्न हुई और धन्यवाद दिया।

इस जिनालय का जीर्णोद्धार करवाकर संरक्षण की अत्यंत आवश्यकता है, गांव में कोई दिगम्बर जैन परिवार नहीं है। पूर्व में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने यहां बोर्ड आदि लगवाये हैं एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा नियुक्त श्री सुरेश जैन द्वारा यहां की देखरेख का कार्य किया जा रहा है।

इस जिनालय के जीर्णोद्धार व संरक्षण हेतु आप अपनी दान राशि तीर्थक्षेत्र कमेटी को भेज सकते हैं। कमेटी के खाते में राशि भिजवाकर कार्यालय में सूचना करें।

नवोदित तीर्थ-शीतल तीर्थ

डॉ. सविता जैन, अधिष्ठात्रा

परमपूज्य, खण्ड विद्या धुरन्धर, प्रज्ञा पुरुषोत्तम, चतुर्थ पट्टाधीश समाधिस्थ आचार्य श्री योगीन्द्रसागर जी महाराज बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे कुशल प्रवचनकार, लेखक, परोपकारी एवं तार्किक आर्ष मार्ग के पोषक संत थे। आचार्य श्री आशुकवि तो थे ही जैनागम के गहन अध्येता भी थे। उन्होंने लगभग 150 पुस्तकों का लेखन अपनी समृद्धशाली लेखनी से किया। आचार्य श्री योगीन्द्रसागर जी महाराज पराविद्याओं के विशेषज्ञ थे। अपनी इस अद्वितीय प्रतिभा से वे समाज के लोगों की जैन धर्म व णमोकार मंत्र के प्रति आस्था को सुदृढ़ रखने का प्रयास करते थे। उन्होंने अपने साधु जीवन के 33 वर्षों में सामाजिक उतार-चढ़ाव, बदलाव को बहुत गहराई से देखा व समझा। जीवन के उत्तरार्ध में वृद्ध संतों/त्यागियों की सामाजिक उपेक्षा आचार्य श्री के अन्तर्मन को पीड़ित करती थी। अपनी इस गहन संवेदना (पीड़ा) को आचार्य श्री ने अपने भक्तों के समक्ष रखकर एक ऐसे तीर्थ निर्माण की परिकल्पना दी जिसमें त्यागी, व्रतियों के आहार, वैयावृत्ति, सेवा के साथ-साथ जीवदया हेतु गौशाला की सम्पूर्ण उचित व्यवस्था हो। इस हेतु आचार्य श्री की प्रेरणा से सन् 2001-02 में गठित एवं रजिस्टर्ड (नेशनल नान वायलेंस यूनिटी फाउण्डेशन ट्रस्ट) द्वारा रतलाम बांसवाडा रोड़ पर 2009 में 21 बीघा जमीन क्रय की गई। 14 जून 2009 को आचार्य श्री के ससंघ सान्निध्य में तीर्थ का नामकरण श्री दिगम्बर जैन धर्मस्थल शीतलतीर्थ कर इसका भूमि पूजन किया गया। इस पूण्य भूमि पर पूज्य गुरुदेव के वर्ष 2009-10-11 के तीन चातुर्मास सम्पन्न हुए। चातुर्मास अवधि में गुरुदेव की तपस्या, साधना, पूजन विधानों के अनेकानेक आयोजन से यह भूमि और अधिक ऊर्जावान होकर मन को शीतलता प्रदान करने में सहायक हो गई।

जब गुरुदेव सशरीर इस तीर्थ पर विराजित रहते थे तो अनेकानेक अतिशय वहाँ होते ही थे किन्तु आज भी उन तपोः पूत महासाधक की तपः वर्गणा, सिद्धियों एवं शक्तियों का एहसास भक्तों को गुरुदेव के समाधिस्थ होने के 9 वर्षों भी होता है। यहाँ गुरुदेव के कई ऐसे भक्त बन गए है जिन्होंने गुरुदेव के साक्षात् दर्शन नहीं किये है किन्तु गुरुदेव के कथनानुसार यहाँ विराजित भगवान आदिनाथ जी के अतिशयकारी चैत्यालय में णमोकार मंत्र का जाप गुरु मंदिर में गुरुदेव के जाप माँ पद्मावती मंदिर में माता के जाप व क्षेत्रपाल मंदिर में क्षेत्रपालजी के जाप कर के अपनी अभीष्ट न्यायिक इच्छाओं को पूर्ण करते है। जो भी दर्शनार्थी यहाँ पर एक बार पूर्ण निष्ठा से हृदय से दर्शनार्थ आता है उनकी मनोकामना यहाँ पूर्ण होती है। साथ ही यह कहकर जाता है कि नाम के अनुरूप यहाँ वास्तव में बहुत शीतलता है शांति है। वह पुनः आने का प्रयास करता है। इस क्षेत्र के अतिशय को यहाँ आकर महसूस किया जा सकता है। कितनी ही बाधाओं से पीड़ित व्यक्ति यहाँ आकर णमोकार मंत्र की जाप करके भूतप्रेत आदि व्याधियों से मुक्त हो जाते है। यहाँ ऐसे अनेकानेक अतिशय प्रतिदिन होते रहते है एवं श्रद्धालुओं का आगमन लगा रहता है। इस तीर्थ पर सुंदर यात्री निवास एवं भोजनालय है। जिसमें श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होती है।

प्रबल इच्छा शक्ति के धारक दृढ़ संकल्पी आचार्य श्री के आशीर्वाद से उनके मनोभाव के अनुरूप यहाँ एक 51 फीट ऊँची कृत्रिम कैलाश पर्वत की पहाड़ी का निर्माण किया है। जिसमें 17 फुट उत्तुंग आदिनाथ भगवान की पद्मासन प्रतिमा स्थापित की जा चुकी है। तीन चैबीसी के 72 जिनालयों की निर्माण प्रक्रिया चल रही है। भगवान आदिनाथ जी की प्रतिमा पर 31 फीट का शिखर भी निर्माणाधीन है।

आचार्य श्री योगीन्द्रसागर जी महाराज का सर्व मनोरथ को पूर्ण करने वाला अति भव्य गुरु मन्दिर का निर्माण पूर्ण हो चुका है।

माँ भगवती पद्मावती पार्श्वनाथ मंदिर का सुन्दरतम मंदिर भी यहाँ दर्शनीय है। इसमें श्री धरणेन्द्र एवं माँ पद्मावती जी की 5-5 फीट की खड़गासन प्रतिमाएँ विराजमान हैं तथा इनके मस्तक के ऊपर तीन भगवान पार्श्वनाथ की सुन्दर प्रतिमायें विराजमान है। यहाँ पर क्षेत्र रक्षक क्षेत्रपाल देव की स्थापना बटुक भैरव नाम से की गई है। क्षेत्रपाल जी की प्रतिमा एवं मंदिर जी मनमोहक है।

गुरुदेव की इच्छानुरूप यहाँ पर एक गौशाला भी संचालित की जा रही है जो म.प्र. गौ सेवा आयोग द्वारा पंजीकृत है इसमें 150 से अधिक वृद्ध एवं असहाय गौवंश विद्यमान है।

अनेकों अतिशयों से युक्त श्री दिगम्बर जैन धर्मस्थल शीतलतीर्थ पो. धामनोद रतलाम प. पू. आचार्य श्री के आशीर्वाद से उन्नति के नित नये आयामों को स्पर्श कर रहा है। वर्ष 2023 में कैलाश पर्वत पर विराजमान तीन चैबीसी का पंचकल्याणक राष्ट्रीय स्तर पर किया जाना संभावित है, परम पूज्य चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य की पूर्ण संभावना है तथा अन्य संघों से भी यथा समय निवेदन किया जाएगा। आप सभी सुधी पाठकों से निवेदन है कि तीर्थ के दर्शनार्थ अवश्य पधारें।

भोजन, आवास की सुन्दर व्यवस्था सदैव उपलब्ध है।

श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कचनेरजी
जि. औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

श्री कलीकुंड पार्श्वनाथ भगवान

अतिशय क्षेत्र कचनेरजी मुख्यद्वार

इतिहास - महाराष्ट्र प्रान्त के औरंगाबाद शहर से ३७ कि.मी. की दूरी पर कचनेर ग्राम में अतिशय युक्त, विघ्नविनाशक, मनोवाच्छित फलदायक श्री १००८ चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान है। उत्तरी भारत के श्री क्षेत्र महावीरजी के समान दक्षिण भारत में यह क्षेत्र विख्यात है। प्राचीन काल के कचनेर ग्राम की मध्यवस्ती में एक जैन मंदिर था जिसमें चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ती थी। पूर्वापर से चले आनेवाले मौखिक इतिहास व भगवान की जयमाला अनुसार यह चतुर्थकालीन मूर्ती है। मध्यकाल से मूर्तीभज्को के पाशवी कृत्यों से बचाने के लिए इसे गुफारी मंदिर में मिट्टी से दबा दिया गया था।

अतिशय - लगभग २५० वर्ष पूर्व एक गाय नित्य सायंकाल जब जंगल से लौटती थी तब जहा गुफा का द्वार है उस जगह अपने स्तनों का दूध झराकर फिर गोठे में जाती थी। यह दृश्य उस गाँव के एक सज्जन संपतराव की दादी प्रतिदिन देखती थीं और आश्चर्य में डूब जाती थीं। एक दिन उसने गाय को जंगल में नहीं जाने दिया और बांधकर रखा सायंकाल का समय होते ही वह रस्सी तोड़कर गोठे से निकलकर प्रतिदिन की तरह उस जगह जाकर दूध झराया। दादी चमत्कार को नहीं समझ सकी वह विचार करती रही। एक दिन प्रातः काल में उसने स्वप्न में देखा कि गाय प्रतिदिन जहाँ दूध झराती है वहाँ गुफा का द्वार है और गुफा में एक मूर्ती संकेत करती है "मुझे इस गुफा से निकाल लोगे तो सबका कल्याण होगा।" दादी माँ की प्रेरणा से मिट्टी खोदी गयी, गुफा का दरवाजा प्रकट हुआ सीढियां मिली। फिर स्वप्न अनुसार सप्तफणयुक्त चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ती पायी गयी। ग्रामवासी इस घटना से अचम्भित होकर भोचक्र हो गये "उस समय गाँव में जैनियों की बस्ती नहीं थी। कचनेर ग्राम से २ कि.मी. दूरी पर जैन टेकडी के जैनियों को बुलाया गया। दिगम्बर जैन प्रतिमा उन श्रावकों को सुपुर्द की गयी। यथाविधि श्रद्धा व भक्ति के साथ गाववाले बाड़े में प्रतिमा विराजित की गयी।

कुछ वर्षों के बाद अशुभ घटना हुई। अचानक मूर्ति की गर्दन धड से अलग हो गयी और जमीन पर गिर कर वेदी पर ही रही। मूर्ति खंडित हो गयी। खंडित मूर्ति को जलाशय में विसर्जन करने का निर्णय समाज ने ले लिया तथा पूजा दर्शन के लिए नई प्रतिमा लाने का संकल्प किया। भगवान महावीर की प्रतिमा श्री क्षेत्र जैनपूर (जिंतूर) से लायी गयी। यह मूर्ति लाते समय महाद्वार पर एवं विराजमान करते समय वेदी पर अतिशय युक्त घटनाएँ घटी।

नई मूर्ति आने के बाद यथासमय श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा जलाशय में विसर्जित करने का निश्चय हुआ। तब क्षेत्र के कार्यकर्ता पिंप्री निवासी श्री लच्छीरामजी कासलीवाल को स्वप्न में दृष्टान्त हुआ और प्रतिमा ने संकेत दिया की मुझे विसर्जित मत करो, एक कमरे में खड्डा बनाकर मुझे उसमें रखकर घी शक्कर से खड्डा भर दो। कमरा बंद कर ताला लगा दो। सात दिन तक अखंड भजन करो पूजन करते रहो, प्रतिमा का धड़ गर्दन से जुड़ जाएगा।

श्री लच्छीरामजी कासलीवाल ने समाज को स्वप्न के दृष्टान्त की जानकारी दी। स्वप्न के अनुसार कार्यवाही करने का समाज ने निर्णय लिया। मंदिर के भीतर एक कमरे में खड्डा खोदकर दृष्टान्तानुसार प्रतिमा रखी गयी। कमरे का ताला लगा दिया गया सात दिन के अखंड भजन-पूजन के पश्चात आठवें दिन कमरे का ताला स्वयं खुल गया, दरवाजे की संखली भी अपने आप कडी से निकल गयी एवं दरवाजा स्वयं खुल गया। लोगों ने देखा की चिंतामणी पार्श्वनाथ की खंडित प्रतिमा पुनश्च जुड़ गयी। लोगो ने आनंद विभोर हो जय-जयकार किया। यथाविधि प्रतिमा पुनश्च वेदी पर विराजमान की गयी। प्रतिमा खंडित होने के निशान अब भी प्रतिमा के गर्दन पर दृष्टिगोचर होते हैं। सभी ने मूर्ति के सातिशय चमत्कार अनुभव देखा।

क्षेत्र पर चातुर्मास निमित्त विराजमान साधुगण

श्री 108 जयकिर्तीजी महाराज

आर्यिका क्षमाश्री माताजी

विधानाचार्य बा.ब्र.पल्लवीदीदी

क्षेत्रदर्शन - श्री १००८ चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान के मुख्य वेदी पर मूलनायक मूर्ति के अलावा शांतिनाथ भगवान, चंद्रप्रभु भगवान, मुनिसुव्रतनाथ भगवान आदि कुल ५० से ज्यादा प्रतिमाएं हैं। दूसरी वेदी पर अनंतनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान है। इसके अतिरिक्त तीन चरण पादुकायें हैं। तीसरी वेदी पर भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान है। चौथी वेदी पर भगवान पार्श्वनाथ, अजितनाथ, आदिनाथ, नेमिनाथ, चंद्रप्रभु आदि तीर्थंकरों की प्रतिमाएं हैं। पांचवी वेदी पर भगवान पार्श्वनाथ चंद्रप्रभु आदि प्रतिमा विराजित हैं। एक देवी पद्मावती देवी की है जिसमें पद्मावती देवी की मूर्ति विराजमान है। इसके अतिरिक्त यहाँ और वेदी हैं लगभग जहाँ नन्दीश्वर मंदिर हैं, उसके बाजू की वेदी पर कलिकुण्ड पार्श्वनाथ स्वामी की मूर्ती विराजमान है। यहाँ उत्तुंग मानस्तंभ है।

इस वर्ष क्षेत्र पर मुनिश्री जयकीर्तिजी महाराज एवं आर्यिका क्षमाश्री माताजी का चातुर्मास चल रहा है। मुनिश्री जयकीर्तिजी महाराज ने बा.ब्र. पल्लवीदीदी के निर्देशन में लगातार ७५ भगवान पार्श्वनाथ विधान क्षेत्र पर समाज के विविध व्यक्तियों द्वारा करवाये हैं। क्षेत्र पर मुनिश्री जयकीर्तिजी महाराज द्वारा की गयी भगवान की भक्ति बहोत ही देखने लायक है। क्षेत्र पर बड़े प्रमाण धर्मप्रभावना हो रही है।

क्षेत्र पर चातुर्मास निमित्त विराजमान साधुगण

प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को वार्षिक यात्रा का आयोजन होता है। यहाँ पर यात्रियों के लिए निवास, भोजन आदि व्यवस्था उत्तम है। यहाँ तांत्रिक प्रशाला, कनिष्ठ महाविद्यालय, मंगल कार्यालय, जैन छात्रालय, गुरुकुल अध्यापक विद्यालय आदि उपलब्ध हैं।

आगामी नवम्बर महीने में कार्तिक पूर्णिमा दि. १९/११/२०२१ दिन शुक्रवार को दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कचनेरजी में बड़ा मेला लगता है। धार्मिक उत्सव, पंचामृत अभिषेक होता है। हजारों की संख्या में भक्तगण आते हैं जिनमें अधिक संख्या में भक्तगण पैदल ही आते हैं। ऐसे अतिशयकारी, चमत्कारी पार्श्वनाथ भगवान के चरणों में कोटि-कोटि नमोस्तु।

इस वर्ष का वार्षिक मेला कोविद-१९ को नजर रखते हुए शासन निर्देशानुसार नियम से संपन्न होगा। जिसकी जानकारी मा. जिल्हाधिकारी औरंगाबाद के सूचना अनुसार समाज को दी जाएगी ऐसा विश्वस्त मंडल द्वारा बताया गया है। क्षेत्र अध्यक्ष डी.यू. जैन, श्री सुरेश कासलीवाल, मेनेजिंग ट्रस्टी एवं विश्वस्त श्री दिलीप काला, प्रकाशचंद पाटणी, श्री संजय कासलीवाल, श्री महेंद्र काला, श्री सुभाष बोहरा, श्री ललित पाटणी, श्री भारत ठोले, श्री रविन्द्र खडकपूरकर क्षेत्र पर कार्यकारिणी मंडल भी हैं।

इस क्षेत्र का कुशल संचालन विश्वस्त मंडल एवं कार्यकारिणी कर रहे हैं। लगभग पिछले १० सालो से श्री प्रमोद कासलीवाल अध्यक्ष, श्री भरतकुमार ठोले महामंत्री एवं समस्त कार्यकारिणी विश्वस्त सदस्यों द्वारा एवं विविध समितियों द्वारा होता था। क्षेत्र का विकास अनोखा, उत्तम, अनुकरणीय है।

अभी नवनियुक्त कार्यकारिणी मंडल क्षेत्र पर निर्वाचित हुआ है। यह भी पहले कार्यकारिणी जैसा ही क्षेत्र पर कार्य करेगा ऐसा विश्वास है।

समाज विश्वस्त एवं कार्यकारिणी मंडल से कचनेर अतिशय क्षेत्रपर मंदिर का नवनिर्माण कार्य जल्द शुरू हो यही भावना रखती है। वह शीघ्र शुरू होवे यही मंगल भावना

संजय पापड़ीवाल
अध्यक्ष – तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल

भरत ठोले
महामंत्री - तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल

ORIGIN AND SPREAD OF JAINISM

Dr. C. Santhalingam

Vedic age in Indian society introduced very important four social groups. Brahmin, Kshatriya, Vaisya and Sutra were the above said main four divisions. Brahmins enjoyed highest rank, performed various yagas and rituals for the welfare of Kings and got number of gifts. Kshatriyas (Kings) led the society by their bravery and valour and dominated the society. The third group Vaisyas were engaged in cultivation, cattle rearing and trade. Fourth section of the people sutras were landless labourers but fully depending on the higher sections for their lively hood. The first three divisions people were called 'Duvijas' and they could learn Vedas, and wear sacred thread. But these practices were banned for the fourth division people. The fourth division people were treated as almost slaves.

Number of cattle were sacrificed in the name of yagas and killed in large feasts which lead to the scarcity of cattle for agricultural purposes. One prohit Brahmin who led to perform one Rajasuyayaga was given 2,40,000 cows as Dhakshina (payment) which caused to the accumulation of wealth at one place and disparity deepened among the society. Vaisyas were affected by heavy taxation and both vaisyas and sutras suffered very much without knowing how to explicit their sufferings and liability. But the kshatryas tried to control the growing influence of Brahmins and the accumulation of wealth among them. These efforts led to the origin of Jainism and Buddhism, the two main non-Vedic religious sects. There were 62 different sects of religion in Gangetic plains during 6th BCE but among them only two viz, Jainism and Buddhism existed long.

Both Vaisyas and Sutras who were expecting an alternative religion volunterity Supported and adopted these Jainism and Buddhism. These two religions rejected the uneven development of society and exploitation of wealth. They propagated simple but sacred ascetic life among the people. That is why the two religions enjoyed enormous support from the Vaisyas and Sutras and developed vigorously.

Mahavira

Vardhamana Mahavira is considered as the founder of Jainism. Previously there were 23 Thirthankaras from Athinatha (Rishapadeva) to Parsvanatha who preached Jainism. But the 24th Thirthankara, Mahavira, alone established this philosophy as a religion. The earlier Thirthankaras were personalities who said to have lived thousands of years miraculous body structure etc. But the 23 and 24 Thirthankaras were accepted by the people as historical personalities. The 22nd Thirthangara named Neminatha is also considered as the brother of Krishna of Mahabaratha. Parsvanatha was said to have lived during 817- 717 BCE almost for hundred years. Mahavira is said to have lived during 599-527 BCE, But still there is difference of opinions and said to have lived from 540 BCE-467BCE.

Mahavira was born at the village 'Basara' near Vaisali in North-Bihar area. His father Siddhartha was a Kshatrya King and his mother Thirisalai was a sister of Chetaka, a chieftain of Lichchavi dynasty. Mahavira, son of a royal family lived for 72 years. He lived for 30 years as an ordinary man, spent 12 years in searching of gnana (wisdom) and lived for 30 years by preaching his enlightened knowledge by travelling various villages in Bihar and finally attained Moksha (death). Markalikosala, who lived with Mahavira for six years, established another sect of religion Ajivika in the same period.

Mahavira attained enlightment (Nirvana) during his 42 year and won over the mundane life. Because of this he was named as 'Jina' (Vira or Mahavira) one who won over his five senses and his followers and devotees were also called Jains Because of their hard ascetic life they were named 'Sramanas'. These people are called in Tamil language as Amanar or Samanar.

Main principles of Jainism:

Jaina religion put forth five major principles. They are

1) Ahimsha (non-violence)

2) Truth

3) Non-stealing

4) equality in wealth (against accumulation of wealth)

5) Unigamy (life with one wife). Asceticism is highly emphasized in the later life.

Their three important philosophies are named as Thriratnas (ie) Good Knowledge, good vision and good character, which are advocated for every men and women.

MahathmaGandhi, the father of our nation, who adapted Ahimsa as his weapon for Independence struggle had taken it from Jainism. Since, he belonged to a vaisya family (Baniya), naturally he had got the principles of Ahimsa from Jainism, which was adapted by the whole trade community. Since this religion had very simple religious practices, without any costly rituals and advocated equality by birth, it was easily adapted by various sections of the society. Lord Mahavira advocated nudity among people but the previous Thirthankaras admitted simple clothing among Jains. This led to two divisions among Jains in later days one was (Swethamparas) white clothed and other nude section (Digmbaras). Nowadays most of the north Indian Jains are Swethambaras but the Tamil speaking Jains are Digambaras

Spread of Jainism towards South:

One traditional story is told to explain the spread of Jainism towards South. During the period of Chandra Gupta Mauriya (322-298 BCE), his Rajaguru Batrabahu, foretold by his astrological knowledge that Pataliputra, the capital area would met with an acute famine for twelve continuous years. In order to escape from that disaster Chandra Gupta Mauriya himself and his subjects migrated towards south of Batrabahu. All these migrants reached Karnataka and settled at Sravana Belakola. No ample evidences is found at Sravana Belakola for this earlier settlement but some evidence are found only after 6" CCE. After this migration one group of Jain followers migrated towards south under the leadership of

Visahacharya through Kongu country and settled at various places in Tamil area. In Tamil Country particularly in Pandya region (Madurai and its Surroundings) provided suitable natural hill abodes for their secluded life and religious practices. Around 300 BCE this settlements might have been occurred around Madurai, Which are well attested by the existence of number of Tamil-Brahmi inscriptions and rock beds in more than a dozen of villages.

Even though Jainism was established as. A separate religion during 600 BCE by Mahavira, some of its relics were identified in Mohanjadaro-Harappan civilization also. The name such as Rishaba deva, Ajithanatha, and Aristanemi etc are found in Yajur- 'Vetha (Dr. Ratha Krishnan, Indian philosophy vol. P.287). Infusion of Jaina and Buddha philosophical doctrins into Saivism and Vaisnavism was quite natural on those days. According to one scholar T.M. Baskara Thondaiman, 'Buddha was replaced by Vishnu and Mahavira was replaced by Siva',

Madurai city, the ancient capital of Pandyas served as a meeting place of academics. The third Tamil Sangam (Academic body) was established and nourished by the then Pandya kings and hence this age is also called Sangam age period from 300 BCE — 300 CE, The functioning of Tamil sangam is later period copper plate charters (Mabaratham Tamil Paduthum and defined its attested by the Madhurapuri Sangam Vaithum — Chinnamanur plates). Around 14 natural hill abodes were identified as Jaina hermitages in and around Madurai, 'Madurai Kanchi' a Sangam poetry by Mangudi Maruthan describes the day to day life of the people and their various religious practices. Both Saivism, Vaisnavisym, Buddism and Jainism were followed by the then people of Madurai city,

Kalpolinthanna ittuvayk Karandai P
Palpurisimili narri nalkuvara
Kayam Kandanna Vayankudainagaratthu
Sembiyanranna Senchuvarpunainthu
Nokku Visaithavirppamekkuuyarnthonki
Irumputhu Sanra Narumpunsekkaiyum
Kunrupala Kuzhiyip Polivanathonra (Madurai Kanchi: 482-488)

Jain centers were surrounded with flower gardens. Their walls were red in colour with paintings. Some more literary references also attest the existence of Jaina Vestiges.

'Neediya Sadaiyodu Adamenik
Kunrurai tavasiyar pola' (Narrinai— 141 verse)
'Unnamayin uyankiyamarunkin
Adapadivathu anrorpola
Varaiseri Siruneri niraiyudan Sellum
Kanayanai Kavinali Kunram (Akam — 123)

Moreover Kalithokai — Maruthakali verse 28 also refers to the existence of Jaina monuments. Inspite of these Sangam literary evidences one more contemporary inscription also confirms the exitstence of Jainism during 3" BCE. Kalinga King Karavela, constructed one temple for the first Thirthankara Adhinatha during 3CBCE and one Pandya king had attended the instalation ceremony which is mentioned in an inscription found at Hastikumba in orissa. (Essays on Jainology-p 23-24)

During Sangam period, the Pandya Kings and merchants had contributed liberally for the creation of Jaina Caves and rock beds around Madurai. Such remains are found even today in the hills such as Mangulam, Arittapatti, Thiruvadavur, Kidaripatti, Kilavalavu, Karungalakudi, Kunnattur (Varichiyur) Anaimalai, Thirupparankundram, Kilakuyilkudi (Jain Hill) Muthupatti, Kongarpuliankulam, Vikkiramangalam, Nadu Muthalaikulam, Mettupatti etc. Other than Madurai district in Pandya country, Places like Kunrakudi, Thirumalai in Sivagangai district, Sittannavasal and Kudimiyanmalai in Pudukottai district, Marukalthalai and Ayyanarkulam (Mannarkoil) in Tirunelveli district the Sangam period Jaina records are found datable to 3BCE - 2CCE. In allover Tamilnadu about 90 Tamil-Brahmi inscriptions related to Jainism have been found so far. Among them more than 60 records are spread around Madurai alone which prove that Jainism was wide spread and enjoyed unchallenging support from then Tamil society.

Post Sangam period witnessed Kalabhra rule in Tamil area from roughly about 250CE-500CE. Kalabhra rulers migrated from Karnataka region and belonged to vellalar community (cultivators). It is told that they were against vedic religion but it is not sure about their own religion. One stone inscription found at Pulankurichi, datable to 500 CE refers to a king Senthan Kurran might have been a kalabhra ruler. According to these records it is clear Kalabhras had constructed new temples, Deva Kulams, VasidevanarKottam, Thapathapalli and donated Brahmadeya lands to the Brahmins. So it is known that they patronized all religious sects equally and did not turn violent face towards any particular religion.

Art of temple construction was in incipient stage in Tamil nadu during Kalabhra period (250-500 CE) but no hectic activities were followed. No ample evidences are there for their original religious colour and connections.

Periyapuranam (12 CE) a Saiva Canan, refers to the story of Murthinayanar who lived in Madurai during Kalabhra period. It is told that he was treated cruely by the kalabhra ruler, who was Karnataka origin, But this statement might have been fabricated one without any proof to subtle the just rule of Kalabhra by Sekkilar.

Silappathikaram, the first among the five Tamil epics describes the Jaina principles through Kavunthi, a nun from Chol anadu, who came to Madurai with Kovalan & Kannaki. Even the Mathurai Kandam begins with the triple umbrella, Bindi tree and Arivan the J ain god for the first time in Madurai a Jaina Sangam was established during 470CE, In Digambara Darsanasara, Devasena says that Vajrananthi, the pupil of Sri Pujyapadha founded the Dravida S angham in Mathura of the Deccan in the year 525 after the de: ith of Vikrama. This was nota literary academy but a religious organisation for propagating the Jaina Dharma in the Tamil Country. (Devakunjari P. 71)

Early Pandyas defeated Kalabhras and established their rule around 550 CE at Madurai under the head of Kadungon. The fourth ruler Aikesari Maravarman alias kun Pandyan Ninra Sir Nedumaran ruled Madurai around 642 — 700 CE. His queen, a chola princess named Mangaiyarkarasi and his minister was Kulachchirai. Both the queen and minister were staunch saivities where as the king had a staunch association and faith with Jains. Thiru gnana Sampantha, the first among the Devaram trio, came to Madurai as per the invitation of the Queen and finally converted the King from Jainism to Saivism. But no ample proof exsisted for the staunch support of the king towards Jainism except some literary references. No evidences are available for the favour enjoyed by the Jains from the particular Pandya king. Instead, he had created so many Agraharams in favour of vedic Brahmnis, and Conducted Hiranyagarbha yaga and Dulabara dhana ete and liberally donated to the Brahmins. Both Vaigai bed inscription and Velvikudi grant attest these facts. So no direct evidences are found to prove his association with Jains.

Anaimalai existed as an important Jain centre during the visit of Thirugnanasambantha is well attested by his song.

'Anaimamalai Athiyaya Vidankalilpala

Allalser Amanarkuyeliyen Allen'

These two lines explicit this uth, Disputes between Saivism and Jainism occurred and they were called Analvatham and Punal Vatham, The defeated Jaing were executed by impalation which is attested by literature such as Nambiyandar Nambi's work Thiruthondar 'Thokai, Sekkilar's Periyapuranam, Ottakuthars' Thakkaiyakapparani etc. Every ninth verse of Sampanthar's Devaram anthology sarcastically refers to Jain saints which indirectly prove the high influence of Jainism on those days. The literary references about the impalation of 6000 jain ascetics had no ample proof and it may be considered as a mere exaggeration. Such imaginary statements were made even in Silappathikaram cpic also regarding the killing of 1000 goldsmiths at a time to pacify the anger of Kannaki. (Silappathikaram 27:127.131) Existence of onc thousand goldsmith at one place (Korkai) during that period was also doubtful and their execution at a time might be imaginary. In the same manner execution of 8000 Jaina ascetics at a time might be an imaginary exaggeration which could be rejected by the nutral scholars.

'Enperun Kunrathuennayiramirudi

Panporunthap Padiyananurum'

These two lines explain the ethical literature Naladiyar was written by 8000 jains who lived at eight hills around Madurai. The same fact is mentioned in one more verse in Naladiyar (aiHjangaluicd Sone)

'Enperun Kunrathu Irunthava munivar

Aram porul inpam veedu enum ivarrin

Thiram pirar ariyum thirathai nadi

Panpura eduthu pankura pakanra

Venpaviyal Ennayiram'

One more evidence could be seen by Yapparunkala Viruththi datable to 11 CCE which enumerates the eight different hills around Madurai where in Jaina ascetics resided.

'Parankunru uruvakam Papparam Palli

Arunkunram Peranthai yanai-Irunkunram

Enrettuverpum Eduththiyamba vallorkku

Senrettumo piravi theenku.

Thakkayahapparani, one 12" CCE literature also affirms the existence of eight different hills, the abodes of Jains.

Vethappagaivar Thamudampu

Veenkaththungum Venkaluvir

Sethappadum Enperunkunrathu

Ellavasokum Erikenave (218-Verse)

Analvatham, Punalvatham, The different kinds of disputes between jains and Saivites took place during the days of Gnanasampantha (ic) in 7th CCE, but these incidents were exaggeratted in 12-13" century literary works. It could be surmised that during the 7th CCE, skirmishes between Saivites and Jains might have been occurred at some places very rarely and as a result of it Jain people might have got some set back in their religious activities. But during the next century Jains regained their influence among the Pandya Kings and rejuvenated ever before. Number of monuments were created with the patronage of Pandya kings and nobles at various previous centres of Jainism around Madurai. Except Mangulam, Mettupatti, Vikkiramangalam and Muthalaikulam all other Sangam age jain centers were revisited and reestablished their influence by creating sculptural representations and inscriptions. Moreover new jain centers at Kurandi Thirukkattampalli, Kuppalnatham. Uthamapalaiyam Aivarmalai (Palani) ete were established during 8-10th CCE.

One can find atleast one Jaina relic at every ten kilometer distance in Pandya region which attest the rejunuvated influence of Jainism on those days. Accananthi a Jaina ascetic lived during 8-9" CCE was instrumental for this rejunuvation of Jainism.

He travelled far and wide in Tamilnadu and created new sculptures at various centre. All important jain centes from Chitaral (Kanyakumari) to all centres in Pandyanadu his creation of sculptures can be seen with inscription.

One among the five Tamil great epics, Jeevaka Sinthamani is a Jaina epic datable to 9" century by Thiruthakka Deva, a Chola minister. In this epic, the historical personality Accananthi is introduced as the guru (teacher) to Jeevaka, the hero of the epic.

Upto 13th CCE, Jainism prevailed everywhere in Tamilnadu. Initially (ic) during Sangam age idol worship was not followed by the Tamil Jains. Butafter the setback, because of the influence of Vedic religious practices, it adapted idol worships and rituals like Vedic religions. Fine arts such as music, Paintings sculptures are also patronized by Jains. Traces of paintings can be scen in some of the Jains sculptures found around Madurai even to-day.

आयोजक - भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

अखिल भारतीय निबंध (व्यावहारिक सुझाव) प्रतियोगिता

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आयोजित निबंध (व्यावहारिक सुझाव) प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रतिभागी तीर्थक्षेत्रों के प्रति अपने विचार रख सकते हैं और उपहार भी जीत सकते हैं। यह प्रतियोगिता दो वर्गों में आयोजित की जा रही है। आज ही भाग लें-

अंतिम तिथि – ३१ दिसम्बर २०२१ **शब्द सीमा – २५०० शब्द**

वर्ग १ - उच्च शिक्षित वर्ग

विषय – मानसिक शांति के अनूठे केंद्र - जैन तीर्थ

पात्रता – स्नातक व समकक्ष स्तर की परीक्षा उत्तीर्ण कोई दिगम्बर जैन पुरुष या महिला

वर्ग २ - पत्रकार वर्ग

विषय - पत्रकारों का जैन तीर्थों के प्रति दायित्व

पात्रता - किसी मान्यता प्राप्त पत्रकार संगठन का सदस्य अथवा किसी रजिस्टर्ड पत्रिका में वर्ष २०१९-२० या दोनों मिला करके न्यूनतम ३ लेख प्रकाशित कराने वाले दिगम्बर जैन पुरुष या महिला

प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार	सांत्वना पुरस्कार
२१,०००/- रू.	११,०००/- रू.	५,०००/-रू.	२,०००/- रू. (दोनों वर्गों से तीन-तीन प्रतिभागी)

सभी विजेताओं को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किया जायेगा

प्रतियोगिता के नियम -

- लेख A/४ आकर के कागज़ पर सुवाच्य हस्तलिपि या कम्प्यूटर कम्पोज किये होने चाहिए।
- लेख २ प्रतियों में भेजे जाने चाहिए।
- लेख के साथ **उच्च शिक्षित वर्ग** हेतु स्नातक या उससे अधिक की योग्यता का प्रमाण भेजें।
- लेख के प्रथम पृष्ठ पर प्रतिभागी का नाम, उम्र, पता, मोबाइल नंबर व ईमेल आईडी आदि का पूरा विवरण देवें।
- **पत्रकार वर्ग** हेतु किसी पत्रकार संगठन की सदस्यता का प्रमाण अथवा २०१९ या २०२० में प्रकाशित किसी पंजीकृत पत्रिका में प्रकाशित कोई तीन लेखों की छाया प्रतियों की प्रमाणित प्रति संलग्न करें।
- दोनों वर्गों में स्त्री एवं पुरुष दोनों भाग ले सकते हैं।
- समस्त प्राप्त लेख भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की संपत्ति होंगे।
- प्रतियोगिता में निर्धारित अंतिम दिनांक के बाद भेजे जाने वाले निबंध/लेख मान्य नहीं होगें।
- लेख निम्न पते पर डाक / कोरियर से भिजवाएं। दूरभाष पर पुष्टि संभव नहीं है।

डॉ. अनुपम जैन, प्रधान संपादक – जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी. टैंक, मुम्बई-४०००००४. ईमेल: tirthvandana4@gmail.com

विशेष: प्रतिभागियों के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी को अपना निबंध भेजने के लिए दिनांक - ३१ दिसम्बर २०२१ शाम ४ बजे तक का समय निर्धारित है।

श्री सम्मेदशिखरजी स्वर्णभद्रकूट

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी पर्वत स्थित स्वर्णभद्र कूट श्री १००८ पार्श्वनाथ टोंक पर नित्यप्रतिदिन

प्रातः बेला में अभिषेक, शांतिधारा का कार्यक्रम किया जा रहा है|

प्रातः प्रतिदिन विशेष प्रसारण जिनवाणी चैनल पर

आप भी अभिषेक, शांतिधारा के पुण्यार्जक बनकर धर्म लाभ प्राप्त कर पुण्य का संचय करें |

निवेदक

शिखरचंद पहाड़िया — राष्ट्रीय अध्यक्ष

संतोष जैन (पेंढारी) — राष्ट्रीय महामंत्री

एवं समस्त पदाधिकारी सह सभी अंचल

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

सम्पर्क सूत्र- 9431387704, 9430702400, 9934934643, 9431395497, 9430309610

आचार्य कुंदकुंद की जन्मभूमि कोनाकोंडला (आंध्रप्रदेश) के विकास के लिए देशभर की जैन समाज से अपील

तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रस्तावित योजना में सहभागी बनें

श्रुतधर आचार्य की परम्परा में कुन्दकुन्दाचार्य का स्थान महत्वपूर्ण है। इनकी गणना ऐसे युगसंस्थापक आचार्यों के रूप में की गयी है, जिनके नाम से उत्तरवर्त्ती परम्परा कुन्दकुन्द-आम्नाय के नाम से प्रसिद्ध हुई है। किसी भी कार्य के प्रारम्भ में मंगलरूप में इनका स्तवन किया जाता है। जिस प्रकार भगवान महावीर, गौतम गणधर और जैनधर्म मंगलरूप हैं, उसी प्रकार कुन्दकुन्द आचार्य भी मंगलरूपी हैं। इन जैसा प्रतिभाशाली आचार्य द्रव्यानुयोग के क्षेत्र में प्रायः दूसरा दिखलाई नहीं पड़ता।

कुन्दकुन्द भगवान की जन्म भूमि कोनाकोंडला जिसे आज सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध होना चाहिए था आज यह स्थान समाज से विलुप्त सा प्रतीत होता दिखाई दे रहा है।

जैन धर्म को जन-जन तक को पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले हमें अनेकों ग्रन्थ प्रदान करने वाले जिसकी वजह आज हम भगवान जिन की वाणी और जैन धर्म को जान पा रहे, उनके उपेक्षित पड़े जन्म स्थान को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी विकसित करने का कार्य कर रही है और इस कार्य को पूर्ण करने के लिए समस्त समाज का सहयोग अति आवश्यक है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी देश-विदेश की समाज से अपील करती है कि हमारे आचार्यों में सबसे प्रमुख आचार्य कुन्दकुन्द भगवन के जन्म स्थान कोनाकोंडला (आंध्रप्रदेश) के विकास के लिए तन-मन धन से तीर्थक्षेत्र कमेटी को सहयोग करें।

तीर्थक्षेत्र कमेटी ने इस वर्ष पहाड़ के वृक्षारोपण का कार्य शुरू किया है, तमिलनाडु की भांति आंधप्रदेश में प्राचीन तीर्थक्षेत्रों के आसपास के मुख्य-मार्गों, राजमार्गों पर क्षेत्र का नाम व दूरी दर्शाने वाले बोर्ड लगाए गए हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने कोनाकोंडला विकास के लिए आरंभिक रूप से 2 करोड़ व्यय करके विकास की योजना बनाई है जिसके लिए आप मुक्त हस्त से दान कर इस ऐतिहासिक कार्य के लिए विभिन्न प्रकार से सहभागी बन सकते हैं।

- कोनाकोंडला में एक दिगंबर जैन मंदिर व भव्य स्मारक का निर्माण होना है, मंदिर निर्माण कार्य में आप सहयोगी बन सकते हैं।
- तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए एक धर्मशाला का निर्माण कार्य होना हैं, एक कमरे की सहयोग राशि 5,01,000 /- रु. है।

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2019-21
Jain Tirth vandana, English-Hindi November 2021
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2019-21,
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printed and Published by **UMANATH RAMAJOR DUBEY** on behalf of **BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE**, Printed at **TRIMURTI PRINTERS**, 5/7 DADARKAR BUILDING, V P ROAD, C P TANK, MUMBAI-400 004 and Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, HIRA BAUG, 2ND FLOOR, C P TANK, MUMBAI-400 004. Editor : **UMANATH RAMAJOR DUBEY**